राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 8 अंक : 96 15 अप्रैल 2005

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : रुपए 40/-

भारत व नेपाल में

एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1. बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग 2
2. लालसा (महर्षि शिवव्रतलाल जी) 43
3. अनमोल वचन 44
4. ध्यानाकर्षण बिन्दू 44
5. सत्संग भावांश 45
6. सतगुरु कृपा 47

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइट:- www.radhaswamidinod.org

इ-मेल:- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 105

दिनांक : 4 मार्च, 1993

समय : दोपहर

देखो सब जग जात बहा.....।। टेक।।
देख-देख मैं गति या जग की बार-बार ये वर्ण कहा।
चारों युग चौरासी भोगी, अति दुख पाया नर्क रहा।।
जन्म-जन्म दुख पावत बीते, एक छिन कहीं न चैन लहा।
पाप-पुण्य बस विपता भोगी, नहीं सतगुरु की शरण गहा।।
अब ये देह मिली कपा से, करो भक्ति जो कर्म दहा।
अब की चूक माफ नहीं होगी, नाना विधि के कष्ट सहा।।
गफलत छोड़ भुलाओ जग को, नाम अमल अब घोट पिया।
मन से डरो करो गुरु सेवा, राधास्वामी भेद दिया।।

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियों, सत्संगियों, माताओ और बहनों ! यह वाणी हुजूर स्वामी जी महाराज की है। वे पूर्ण सतगुरु थे। कुल मालिक थे। राधास्वामी धाम से आये थे। जो ब्रह्म में लीन हो जाता है हम उसे ब्रह्मनेष्ठा कहते हैं। वह उस जगह पर पहुंच जाता है। शब्द से मिल जाता है। उसको हम शब्द भेदी या शब्द से ओत–प्रोत हुआ कहते हैं। वे तो शब्द का ही रुप थे। कुल मालिक थे। उन्होंने बड़ी सुन्दर मिसाल देकर बताया है–

देखो, सब जग जात बहा।

कभी आप लोगों ने यह ख्याल नहीं किया कि सब जग किस तरह बहा जा रहा है? पर स्वामी जी महाराज तो बड़े बेधड़क होकर कहते हैं कि देखो सब जग बहा जा रहा है। अगर बहते हुओं को कोई निकालने के लिए आ भी जाता है तो हम उसके खून के प्यासे बन जाते हैं। उनकी जान के ग्राहक बन जाते हैं। हम अपनी गलती को कभी भी महसूस नहीं करते हैं। महात्मा चेताते हैं कि अरे पगला! यह टाइम बड़ा कीमती है। पर कई लोग कह देते हैं–

अब का जग मीठा, अगला किन दिठ्या।

खाओ, पीओ, मजे उड़ाओ, अगला जन्म किसने देखा है। पर यह कभी नहीं सोचते कि–

लेखा पाई-पाई का, राज नहीं कोको बाई का।

कर्मों का भोग तो राम को भी भोगना पड़ा। ऋषि मुनियों और अवतारों को भी भोगना पड़ा। कौन ऐसा है जिसे अपने कर्म का भोग नहीं भोगना पड़ा हो? सभी को कर्म का भोग, भोगना पड़ता है। तुम्हारे शास्त्र कहते हैं–

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करहिं, तस फल चाखा।।

इस तरह से स्वामी जी महाराज बहुत ही सुन्दर मिसाल देते हैं–

देखो सब जग जात बहा।

सारा जग कैसे बहा जा रहा है? युगों की बातें तो फिर बताऊंगा। पहले मैं आपको इस वर्तमान संसार की बातें बताता हूं कि हम जो हाजिर हैं, वे भी बहे जा रहे हैं। कोई धन के घमण्ड में बहा जा रहा है, कोई बेटे, पोते, धी, जवांइयों के घमण्ड में बहा जा रहा है। कोई राजनीति में और कोई पार्टियों का मालिक बनकर बहा जा रहा है। बहने का मतलब यही है कि हम अपने

आदि घर को भूलते जा रहे हैं। अपने शुभ कर्म को छोड़ते जा रहे हैं। हमारी जो जाति थी, हमारा जो घर था उसको तो हम भूल ही गए। हम तो सतपुरुष के अंश थे परन्तु काल के चक्कर में पड़ कर अपना सब कुछ भूल गए हैं। न हमें अपने पीछे का पता है और न ही हम आगे का कुछ जानते हैं। हम तो अपना जीवन बरबाद ही करते जा रहे हैं। कोई महात्मा समझाने की कोशिश करता है तो कहते हैं कि राम की भक्ति तो भूखे ही किया करते हैं। मेरी बीती हुई बातें आप लोगों को बता देता हूं। मेरी छोटी उम्र थी। दो घड़ी मालिक का नाम लिया करता था। चोर भी भूखा ही भक्ति करता है। भर पेट कोई भी भक्ति नहीं करता है। अगर पेट भरा हुआ ही भक्ति करता तो ईसा मसीह ने ऐसा नहीं लिखा होता–अमीर की भक्ति करना तो ऐसा है जैसे कि सूई के नाके में से ऊंट निकालना। शायद ऊंट निकल जाएगा पर अमीर भक्ति नहीं करेगा। यह ईसा मसीह का लेख है। जब हम संसार से जाते हैं (अर्थात् जब हमारी रूह यमराज के पास जाती है।) तो हमारी सारी चौंध खुल जाती है। उस वक्त तड़पते और चिल्लाते हैं कि मैंने बड़ी गलती की कि मैंने सम्भाला नहीं लिया कि मैं किस लिये आया था। शराबों–कबाबों और विषय–विकारों में सारी जिन्दगी बरबाद कर दी। इस तरह वे बड़े भारी पछताते हैं। मेरी बात पर विश्वास करो। मैं छोटी उम्र में लगा था। मैंने इस काम का अभ्यास करके भी देखा, मैं अपनी तजुर्बे की बातें बताता हूं। सत्संगियो ! जब जीव चोला छोड़ता है उस वक्त उसकी बड़ी बुरी दशा हो जाती है। अगर अभ्यासी हो तो दिन में 17 बार यह काम करके देख सकता है। आप पूछोगे इस शरीर का वाली वारिश कौन है? जो सांस लेती है। वह न्यारी वस्तु है। मन न्यारी वस्तु है। चित्त, बुद्धि, मन, अहंकार न्यारी वस्तुएं हैं। तीन गुण न्यारी वस्तुएं हैं। कितनी बातें पूछोगे? उसकी कर्तम कर्ता तो एक ही वस्तु

है। इसे हम सुरत कहते हैं। इसे हम चेतन शक्ति कहते हैं। किसने इसको काबू में कर लिया है? इसको हमारे कर्मों ने काबू में कर लिया है। बल्कि काल महाराज का इतना विकट चक्र चल रहा है कि अगर कोई उस चक्र से निकलने की कोशिश भी करता है तो उल्टा भूल–भुलैया का ऐसा परदा डाल देता है कि वह इससे कभी निकल ही नहीं सकता है। मैं आप लोगों को अपनी बातें बताता हूं।

एक दिन मैं बैठा हुआ था। मेरा भजन का टाइम था अपनी बातें बतानी बड़ी मुश्किल हैं। भजन का टाइम छोड़कर मेरे पास रुपये थे वे गिनने लग गया। जब मैंने चार पांच गिने तो मैंने सोचा कि ऐ मूर्ख! ऐ गंदा! नालायक! तू भी इस ठगनी ने ठग लिया है। तेरा इतना कीमती टाइम है और उस टाइम को छोड़कर इस मिट्टी में हाथ दिए बैठा है। मैंने वे रखे और अपनी समाधि में चला गया। सच पूछो तो कई देर तक समाधि नहीं लगी। क्यों? मैंने कल सत्संग में कहा था–

कबीर मन एक है भौं जगह लगा।
भौं हर की भक्ति कर, भौं विषय कमा।।

मैं आप लोगों को चक्कर से निकलने के लिए बताता हूं। कई देर तक समाधि नहीं लगी। मैंने सोचा कि तू तो गिर ही गया है। लोग ऐसे ही तो गिरते हैं। एक–एक इन्द्री के विषय में आकर गिर जाते हैं। यह भी इन्द्रियों का ही एक आनन्द था। यह माया भी तो विषयों का आनन्द है। यह भी एक विषय ही है। मैंने उसी वक्त दो घंटे की जगह ढाई घंटे अभ्यास किया। क्योंकि आध–पौने घंटा तक तो मन ही नहीं टिका। गुनावन उठते ही रहे। इसलिए मैं भी कहता हूं कि देखो, सब जग जात बहा। क्या मैंने अपनी जिन्दगी में चोरी नहीं की? एक बात तो नहीं की। बस वह आप लोगों की मेहरबानी थी आप लोगों की दया थी। इससे मैं बच

गया। आप ही की दया थी। क्योंकि मुझे यह डर लगा करता था कि अगर बदनामी हो गई तो लोग क्या कहेंगे? फिर मेरे सतगुरु का हाथ भी मेरी पीठ पर था। इससे बच गया और कौन सी बातें बताऊं कोई नहीं। सो चोरी तो मैंने की। आप लोगों को यह बात कई बार बताई है कि जिन्दगी में मैंने एक बार दो घुंघरू चुराए थे। मैं तीन चार दिन का भूखा था। मैंने जिन्दगी में एक दिन सिरटी भी तोड़ी थी उसके खेत में जाकर प्रण किया कि जितना मैं बाजरा निकालूंगा उतना ही दे दूंगा। खेत वाले को तो पता भी नहीं था। मैं आपके आगे ये बातें छुपाता नहीं हूं। जिन्दगी में ये दो चोरी कीं और तो मैंने कोई भी गलती नहीं की। मैं गांव का रहने वाला हूं। मेरा गांव दिनोद है और वहीं की मेरी पैदाइस है। वहीं भाइयों में रहा हूं। मैं बल्कि सत्संग में कहा करता हूं कि अगर मैंने अपनी जिन्दगी में किसी का बुरा किया हो तो मेरे आगे आ जाओ। मैं माफी मांग लूंगा। जबरदस्ती भी अगर कोई कह दे तो अगले की मर्जी है। माफी मांग लूंगा। सो मैं बेधड़क होकर कह देता हूं कि सत्संगियों! मैं तो तुम्हारे ही भले के लिए कहता हूं, नहीं मानते हो तो तुम्हारी मर्जी है। तुम्हारी मदद तो तुम्हारे ही कर्मों ने करनी है। तुम्हारे भाई भतीजों ने तो नहीं करनी है। बेटे, पोते और धी–जवांइयों ने नहीं करनी है। तुम्हारी मदद तुम्हारे ही कर्मो ने करनी है और तुम्हारे कर्म कैसे बनेंगे? यही है जो सत्संग की सेवा करता है वह उस सेवा से तिर जाएगा। एक–एक सेवा से एक सौ इक्कीस पीढ़ियां तिर जाती हैं। सो जो सेवा में रात और दिन लगे रहते हैं उनका भला क्यों नहीं होगा? क्या तुम्हारे शास्त्र झूठे है? मैं कई बार बताया करता हूं–

सेवा सिद्ध सफलता, सेवा विजय अपार।
सेवा में मेवा मिले, सेवा में करतार।।

सेवा में सभी कुछ मिल सकता है। सेवा करने वाला निस्वार्थ

सेवा करे। अगर स्वार्थ लेकर सेवा करोगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। अगर तुम किसी लालच में आकर सेवा करोगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। मैंने पिछले सत्संग में कहा था–

गुरु लोभी शिष्य लालची, दोनों खेलैं दाव।
अधबीच में डूबसी चढ़ पाथर की नाव।।

मैंने ये कई बार कहा है। इसीलिये मैं आपको बताता हूं कि जो निस्वार्थ होकर सेवा करता है, उसका फल तो सतगुरु उसी वक्त अदा कर देता है। उसको पूरा कर देता है। संतों के दरबार में तुम जाते हो। मेरा तजुर्बा है, अगर तुम कोई आस लेकर जाते हो तो संत उसका बदला उसी वक्त उतार देते हैं। कई लोग भेंट पूजा चढ़ा कर मन में सोचते हैं कि मेरा काम बन जाए। अगर संत उसी वक्त उसका कर्ज नहीं उतारे तो संत ही कोढ़ी हो जाए। तो इस कारण तो उसका सत्यानाश हो सकता है। परदा रखते हैं और परदा करके उसका बदला उतार देते हैं। कई कहकर खुश हो जाते हैं कि मैंने इतने रुपये चढ़ा दिए। सो सतगुरु उसी वक्त उनका कर्जा उतार देते हैं नहीं तो वे बड़े दुखी हो जाएं। जो गुरु शिष्यों का कर्जा नहीं चुका सकता है तो उसकी आखरी वक्त में बहुत दुर्दशा होती है। या तो अधरंग मार जाता है या कीड़े पड़कर मरता है या काल का कर्जा चुकाना मुश्किल हो जाता है। मैं घमण्ड में नहीं कहता हूं। मेरी चार पीढ़ियां पवित्र थी। इसीलिए कह सकता हूं। मेरे सतगुरु शहनशाह थे। नब्बे वर्ष की उम्र तक एक दिन भी बीमार नहीं हुए। मैं सोचता हूं कि मेरे सतगुरु शहनशाह थे और उनके गुरु महर्षि शिवव्रत लाल जी ने छः महीने पहले बता दिया था। वे कभी भी बीमार नहीं हुए। आखिरी वक्त पर पांच मन दूध मंगवा कर और चरणामत लेकर प्रसाद मंगा कर चोला छोड़ा था। उनके गुरु महाराज राय सालिगराम ने पहले ही बता दिया था और स्वामी जी महाराज जी की तो कया कहूं?

बल्कि उन्होंने तो दो साल पहले ही बता दिया था। पर सालिगराम जी रोने लग गए। उन्होंने कहा कि महाराज जी! आपकी तो थोड़ी ही उम्र है। आप क्या करते हो? वे कहने लगे कि मेरा जाने का टाइम है। राय सालिगराम जी पांव पकड़ कर रो पड़े। वे गुरुमुख थे। आपको मैंने पहले भी ये बात बताई थी कि गुरुमुख चाहे जो कर सकता है। गुरु को वह नचा सकता है। गुरुमुख की महिमा बड़ी भारी है। उन्होंने पांव पकड़े और कहा कि अगर छोड़ कर जाते हो तो आप अन्याय ही करते हो। अभी छोड़ कर मत जाओ। उन्होंने कहा–चलो। फिर तू क्या चाहता है। सालिगराम जी ने कहा–दो साल और ठहर जाओ। उन्होंने कहा–तेरी मर्जी है तू अब मुझे किराये के मकान में ही रखता है। क्योंकि अब तक का मेरा किराया पूरा हो चुका था। दो साल और स्वामी जी महाराज उस चोले में रहे। डाक्टरों ने सिर मार लिया, बिमारी कोई भी नहीं मिली। उन्होंने कहा कि बिमारी कोई भी नहीं है। मैं किराये के मकान में रहता हूं। यही बिमारी है। सो जब भी संत जाने की तैयारी करता है तो कभी भी दखल नहीं देना चाहिए।

मैं आप लोगों को सत्संग की बातें बता रहा हूं। हमारी मदद कौन करता है? अब सारा ही जग बहा जा रहा है। जितने भी यहां हैं सब के सब ही बहे जा रहे हैं। किस तरह? कोई संतों के पास आकर कहता है कि–मेरे पास धन हो जाए। कोई कहता है कि मेरा बेटा ही ठीक हो जाए। कोई कहता है कि मेरे पास बहुत सारी जायदाद हो जाए। कोई कहता है कि मेरी इज्जत हो जाए इसमें आपने यह नहीं सोचा कि ये सभी बहे ही जा रहे हैं। किसी ने भी यह ख्याल नहीं किया कि अपने इस जीवन को सफल ही कर लें। मुझे एक मिसाल याद आ गई। मेरे दाता ऐसी बहुत मिसालें दिया करते थे। अरमान साहब ने बताया था कि एक ब्राह्मण था। उसने सत्तर वर्ष तक गंगा माई की पूजा की। इतनी पूजा इसलिए की कि

गंगा माई उसे एक लड़का दे दे। बस। मालिक की मौज हुई कि उस गंगा माई की पूजा से उसके यहां एक लड़का हो गया। जब वह लड़का हुआ तो वह सूरदास था, अंधा था। जब उसने हवन–यज्ञ और पूजा–पाठ करवाई तो उस वक्त लड़का कुछ बोल पड़ा। उसके बाप ने कहा–अरे सूरदास! तुझे ये बात कहते शर्म नहीं आई क्या? तू सूरदास है। उसने कहा–पिताजी! सूरदास मैं नहीं आप हो। मैं तो सुआखा हूं, आप ही अंधे हो। सोचो! मैं तो इस बात को अपने आप पर घटा लिया करता था। आप किस पर घटाओगे? यह देख लो? बाप ने पूछा कि पगला मैं अंधा किस तरह हूं? उसने फिर कहा कि पिता जी। आप सचमुच ही अंधे हो और आप अंधे भी इतने हो कि आपको कुछ भी नहीं सूझता है। आपने अपनी अगत और जगत दोनों ही खो दी हैं। उसने पूछा–किस तरह? पुत्र ने कहा–आपने 70 वर्ष तक गंगा की पूजा की। फिर क्या मांगा? पिता जी, आपने गंगा माई से मुक्ति क्यों नहीं मांगी। क्या अंधा होने में कोई कसर है? अगर गंगा ही देती है तो गंगा माई से मुक्ति मांग लेते तो आपका जीवन सुखी हो जाता। आपने लड़का मांगा और वह भी अंधा। आपकी सारी जिन्दगी ही बरबाद चली गई। सो तू सब से ज्यादा अंधा है।

ऐ प्रेमियो, सत्संगियों ! तुम सब अंधे हो। सुआखा तो वही है जिसे सतगुरु का ज्ञान है। उसके हदय में ज्ञान जम गया है, जिसने संसार से मुंह मोड़ लिया है। मैं यह नहीं कहता कि घर छोड़ दो। मैं भी तो घर में ही रहता हूं और तुम्हारे से बड़ा घर है। मैं भी तो परिवार की संभाल करता हूं। तुम्हारे से बड़ा परिवार है। अपना–अपना काम सभी कर रहे हैं। तुम्हारी तो एक मां है लेकिन मेरी तो हजारों और लाखों मां हैं। तुम्हारी एक बहन है। मेरी तो लाखों बहनें और भाई हैं। मैं भी आप लोगों की तरह अगर फंस गया तो मर गया। क्या करोगे? इसलिये संभलो और इस बहते हुए जग से निकल

जाओ। आग लगी हुई है। यह मत सोचो कि यह किसने लगाई है? किस तरह से लगाई है? इस आग से निकल जाओ। यह संसार तो धोखे की टाटी है। इसीलिए तो राजा महाराजा भी इसे छोड़ कर चले जाया करते थे। पर संतों ने तो वह युक्ति बता दी है–

घर बैठे बनो फकीर, मन मार सुरत को डाटो।

घर बैठे ही फकीर बन जाओ। अपने मन को काबू करके अपनी सुरत को स्थिर करो। सब का सब काम घर में ही करना है। मैंने सीधी बातें आपको बताई। इसीलिए कहते हैं कि सब जग जात बहा। सोचो जो मैंने बातें बताई उस हिसाब से सभी तो बहे जा रहे हैं। उस मालिक से मालिक को ही मांगो। बेटे, धी और जवांई मत मांगो। न परिवार मांगो न कुछ और मांगो। बल्कि मैं तो यह भी कहता हूं कि अपने स्वास्थ्य को भी मत मांगो। यह मांगोगे तो भी कर्ज बाकी रह जाएगा। हमारे खोटे कर्मों का कर्जा चुकाने के लिए ही बीमारी आती है। हमें तो केवल वही चीज मांगनी चाहिए जो सारी ही चीजों की जान है और वह सब का कर्ता सतगुरु है। सतगुरु से सतगुरु को मांगो जीवन सफल हो जाएगा। अब स्वामी जी महाराज कहते हैं–

देखो सब जग जात बहा।

क्या आपने कभी ख्याल किया कि ये सब जग कैसे बहा जा रहा है? चारों ही युग बहे जा रहे हैं। चारों युगों की मैं हालत बताता हूं। स्वामी जी कहते हैं कि चारों युग ही बहते जा रहे हैं। सब जग नहीं सब जुग जात बहा। सारे ही जुग बहे जा रहे हैं। सतयुग को बड़ा अच्छा बताते हैं। वह कैसे बह गया? आपने सुना होगा सतयुग की बहुत बड़ाई करते हैं। पर सतयुग में इस आत्मा के ऊपर आवरण चढ़ा हुआ था। आवरण अज्ञान का एक पर्दा होता है। वह अज्ञान का पर्दा चढ़ा हुआ था। उस अज्ञान के पर्दे को दूर करने के लिए संतों ने विवेक निकाला। उस विवेक से वह

आवरण दूर हट जाया करता था। मैं तो सीधा सादा आदमी हूं। पढ़ा लिखा नहीं हूं। मैं यह जानता हूं कि विवेक सच्चाई को छांटने, सच्चाई का निर्णय करने को ही कहते हैं। इन्सान में विवेक होना चाहिए। विवेकी की मिशाल देता हूं। महाराज जी ऐसी मिशाल दिया करते थे।

कोई राजा अच्छा धर्मात्मा था। उसके पास कोई बनावटी साधु आ गया। बनावटी साधु एक लंगोटी बांधे हुए परमहंस बन कर बैठ गया। बहुत लोग उसके पास गए। दुनिया उसको देखने चली गई कि परमहंस है। राजा के भी दिल में बात आई कि परमहंस आया हुआ है दर्शन करके आऊं। रानी ने कहा–मैं भी परमहंस के दर्शन करके आऊंगी। राजा ने कहा कि चल। राजा और रानी दोनों ही चले गए परमहंस के दर्शनों के लिए। जब रानी जा कर बैठी, वह परमहंस आकर रानी के घुटनों में बैठ गया। परमहंस की यह गति होती है कि वे नग्न ही रहते हैं। भाई नरेन्द्र ने एक दिन देखे थे परमहंस। मास्टर जी ने भी देखे थे। इन्होंने पूछा–ये क्या है? मैंने बताया कि ये परमहंस हैं। पर वे परमहंस नहीं थे। वे बनावटी सांड थे। परमहंस की गति ऐसी होती है कि वह जो चाहे कर सकता है। परमहंस उस गति में चला जाता है। वह उस देश में पहुंच जाता है। जहां सोहम् की धुनि होती है। उसका वह रूप स्वयं ही बन जाता है। अब वह भागकर रानी की गोद में बैठ गया। रानी विवेकन थी। रानी ने सोचा कि उसके मुंह में पेड़े दे दे। वह उसके मुंह में मिठाई देने लगी। वह पेड़े खाने लगा। अब। यहां तक तो ठीक था। वह रानी की साड़ी पर शौच से निपट गया। रानी ने सोचा कि कोई बात नहीं है। यह परमहंस है। शौच से साड़ी पर ही निवत हो गया है। पर जो पेड़ा वह लिए हुए थी उस पेड़े पर बिष्ठा लगा दिया और उसके मुंह की तरफ किया उसने उसी समय मुंह मोड़ लिया। ज्यों ही मुंह मोड़ा उसके

मुंह पर रानी ने थप्पड़ मार दिया। रानी ने कहा–यह तो बनावटी परमहंस है। इसको जेल में दे दो। इन बनावटी गुरुओं ने तुम्हारा सत्यानाश कर दिया। पर तुम समझे ही नहीं। इसीलिए तो जग बहा जा रहा है। इन गुरुओं ने तुम्हारा धन भी लिया और इज्जत भी ली। मेरे सतगुरु की ड्यूटी दी हुई थी, नहीं तो मैं भी गंदा काम कर लेता। पर मेरे सतगुरु ने मुझे ड्यूटी दी थी कि बेटा! जिन्दगी को संभाल कर रखना। यह बार–बार नहीं मिलती है। रामायण में आता है–

बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सद् ग्रंथन गावा।।
अब के चूके नहीं ठिकाना। दिन पर दिन चोला होय पुराना।।
तू करले बंदे भजन हरि का।
फिर क्या बनेगा, इस खोड़ मरी का।।
कबीर काया खोटी, कभी माड़ी कभी मोटी।

ज्यादा मोटे होंगे तो ज्यादा राख (भस्म) हो जाएगी और अगर पतले होंगे तो थोड़ी होगी। पर भागी तो वही इन्सान है जो इस सारे जग को बहा देख कर इसमें से निकल जाए। इस निकलने की बातें बताता हूं। सतयुग में आवरण चढ़ा हुआ था और उस आवरण को दूर करने के लिए विवेक था और विवेकी पुरुष ही आवरण को दूर किया करते थे। आगे त्रेता युग आया। त्रेता युग में आत्मा पर विक्षेप पड़ गया। उस विक्षेप को हटाने के लिए तप का साधन अपनाया गया। आपने देखा कि त्रेता युग में बड़े–बड़े तपेश्वरी हुए हैं। पर कहते हैं–

तप राज लिया बड़ा जुल्म किया। अगम अंधेरा नहीं सूझत है।
घट में है सत शालिग्राम, तू चेतन हो जड़ पूजत है।

ऐ इन्सान! तेरे अन्दर वह चेतन पुरुष बैठा है। फिर भी तू जड़ को पूजता फिरता है? यह बड़े ही आश्चर्य की बात है। यह बात भी समझ में नहीं आती है। हमारे बजुर्ग तो चेतन हैं उनकी सेवा

करनी है। इसे तो समझ ले। वह त्रेता युग भी बीत गया और द्वापर युग आ गया। उस द्वापर में आत्मा पर एक और पर्दा पड़ गया। कुल तीन पर्दे इस पर आ पड़े। द्वापर में मल का पर्दा और आ पड़ा। मल को दूर करने के लिए धर्म पुण्य के साधन अपनाए गए। तीनों पर्दे ऐसे पड़े कि इनको दूर करने के साधन भी साथ ही अपना लिए गए। पर ये तीनों युग बीत गए। इसे कहते हैं–

देखो सब जुग जात बहा।

अर्थात सारा ही जग बहा जा रहा है और सुरत शब्द का अभ्यास करना ही मुश्किल हो गया। यही कहते–कहते कलियुग आ पहुंचा। कलियुग में आत्मा पर तीन पर्दे पड़े हैं। इन्हें कैसे दूर किया जाए? कभी इसका विचार तो नहीं किया। पर हमारे संत और महात्माओं ने इस बात का निर्णय कर दिया। स्वामी जी कहते हैं–तीन युग बीत गए और तीनों युगों के मल विक्षेप और आवरण के पर्दे पड़े हुए हैं। अब इस कलियुग में तीनों पर्दो को कैसे हटाओगे? ये कभी सोचा है? इसे सहज योग कहते हैं। इसे आसान योग कहते हैं। इसे बूढ़ा भी और जवान भी कर सकता है। पर सतगुरु शहनशाह मिलना चाहिए। अगर सतगुरु अधूरा है तो कुछ भी नहीं है। फिर तो–

पूर्ण सतगुरु मिला नहीं, सुनी अधूरी सीख।
बिना ज्ञान के कारण, बेच खाई भीख।।

भजन भी आप ही बन जाता है। यह मेरे बस की बात नहीं है। मेरे सतगुरु शहनशाह थे। यह भजन क्या चीज है? यह भजन तुम छः महीने में कर सकते हो। एक महीने में कर सकते हो। पर तुम्हारे विचार पवित्र होने चाहिएं। सतगुरु पूरा होना चाहिए। तो आप यह भी पूछना चाहोगे कि आप तो पूरे होंगे पर हमारा तो भजन नहीं बना। मैं तो कोई सतगुरु नहीं हूं। सतगुरु तो मेरा सतगुरु ही था। मैं तो भेद बताने वाला हूं। मैं तो आप को समझा

देता हूं। उस रास्ते भेजने वाला हूं। इन गुरुवों की क्या दशा हुई है मैं तो उससे बचना चाहता हूं। अब कलियुग में तीनों पर्दे कैसे दूर किए जाएं? मैं इस वाणी का अर्थ बताता हूं कि देखो सब जग जात बहा। अब तीन युग तो बता दिए कि ये तीनों बह गए। सतयुग, त्रेता और द्वापर अब कलियुग आ गया। इस कलियुग में कैसे बचोगे? अब तीनों पर्दों को कैसे उतारोगे?

कलयुग केवल नाम आधारा। सुमर-सुमर नर पारा।।

कलयुग में तीन पर्दे हटाने के लिए पूर्ण सतगुरु की शरण है। इन तीनों पर्दो को दूर करने के लिए काबिल महात्मा की जरूरत है जो शब्द भेदी सतगुरु हो और अपने चार पैसे कमा कर खाता हो। उस सतगुरु की जरूरत है। आप को अगर ज्यादा बातें कहूं तो आप यह कह दोगे कि हर बार यही कहते हो। मेरी एक ही बात को समझ लोगे तो तिर जाओगे–

गुरु दर्शन की प्यास, और वचन पर विश्वास।

बाबा सावण सिंह कहा करते थे कि सतगुरु स्वरूप की स्याही बना कर आंखों में डाल लो। मैं कहता हूं–नहीं गुरु दर्शन की प्यास हो और वचन पर विश्वास हो। तिर जाओगे। पर मैं सतगुरु की बातें कहता हूं। तो इन तीनों पर्दों को दूर करने के लिये है। सतगुरु की सेवा। इशारा तो तुलसीदास ने भी किया है जैसा मैंने आपको बताया–

कलियुग केवल नाम आधारा।
सुमर-सुमर नर उतरहिं पारा।।

स्वामी जी ने भी इशारा दिया है। वे कहते हैं–

कलियुग कर्म धर्म नहीं कोई।
नाम बिना उद्धार न होई।।

सो नाम तो नाम ही होता है। नाम नामी से मिला देता है। सो इस बाणी द्वारा इन्होंने ये कहा है–

देख-देख मैं गति या जग की बार-बार यूं वर्ण कहा।

हम सभी के सभी बहे जा रहे हैं। पर जो असलियत बताता है उसके ऊपर तो कोई विश्वास ही नहीं करता है। हम गिरते जा रहे हैं। इस असलियत को समझो, वह नाम तुम्हारे अंदर है। बाहर से नहीं लाना है। यही बात है कि जब पूर्ण सतगुरु मिल जाता है और उसकी दया मेहर होती है फिर भजन तो कुदरती ही हो जाता है। सो सारा काम ही बन जाता है। आगे कहते हैं–

चारों जुग चौरासी भोगी, अति दुख पाया नर्क रहा।

ये स्वामी जी की बातें तो मैंने बता दीं पर शब्द भेदी कोई मिला नहीं। अगर शब्द भेदी सतगुरु मिल जाता तो पीछा छुट जाता। सो महात्मा कहते हैं कि सतगुरु पूर्ण किसको कहते हैं? सतगुरु पूर्ण वही है जो भेदी हो।

मोटे बंधन सब तजैं, झीने तजे न जांह।
पीर पिताम्बर औलिया, सब को गए खा।।

मोटे बंधन तो सभी छोड़ देते हैं। मोटी माया को भी त्याग देते हैं। पर झीनी माया सब को खा जाती है। वह झीनी माया मान बड़ाई है। सो इन चारों युगों में बहे जाने का भी मतलब यही है कि बड़े–बड़े कष्ट झेले, कितनी इस असंख्य जियाजून में दुख पाते रहे। चक्कर काटते रहे। मैं कई बार मिसाल दिया करता हूं कि मानस का चोला ही कीमती है। इसमें भी आकर चूक गए तो चूक ही गए।

महात्मा कहते हैं–कोई अंधा था। वह बड़ी भारी चार दिवारी में रूक गया। वह एक किले की थी। उसके अंदर वह चला गया। अब उसने सोचा कि रास्ता तो मिलता नहीं है कैसे निकलूं? उस सूरदास ने युक्ति निकाली। उस दिवार को उसने हाथ लगा दिया और दिवार से हाथ लगाये–लगाये चलता गया, जब वह दरवाजे के पास पहुंचा तो उसको खुजली हो गई। एक हाथ से उसने सिर

खुजलाना शुरू कर दिया और दूसरे हाथ से उसने अपनी कमर खुजलानी शुरू कर दी। दोनों ही हाथों से खुजलाने लगा और उस चार दिवारी के दरवाजे को छोड़ कर आगे निकल गया। अब उसको फिर से पूरा का पूरा चक्कर काटना पड़ा। इसीलिये मेरे कहने का मतलब तो यही है कि मानस का चोला एक दरवाजा है और यह लख चौरासी किले की चार दिवारी है, इसमें हम फंस गए हैं। इससे निकलने के लिए ये मानस का चोला एक दरवाजा है। अगर इस दरवाजे को भी तुम चूक गए तो चूक ही गए। आप लोग पूछोगे कि क्या आपने दर्शन कर लिए हैं? क्या आपको कुछ मिल गया है? यह तो मेरे से मत पूछो। इसका तो अपने आप ही निर्णय करो। मैं तो कह भी नहीं सकता हूं और जान भी नहीं सकता हूं। क्योंकि मेरे वश की बात नहीं है। पर आप निर्णय कर सकते हो अगर आपके पास बुद्धि हो तो। मुझे तो पता नहीं है। मैं तो अपने सतगुरु का हुकम था उसकी ड्यूटी बजा रहा हूं। जिस तरह बजेगी। बल्कि मैं तो यहां तक खुशी मनाता हूं कि मैं थक कर पड़ता नहीं हूं। रात और दिन तुम्हारी हाजरी बजाता रहता हूं। यह मेरे सतगुरु की दया है। सो मैं आप को बता रहा था कि उस किले से निकलना चाहते हो तो विषय–विकारों की खुजली है। इससे बच जाओगे तो बच ही जाओगे। अगर इससे नहीं बचे तो वही पूरा का पूरा चक्कर काटना पड़ेगा उस लख चौरासी जिया जून में। इसीलिए महात्मा कहते हैं। मैं कितनी कहूं। वे तो कह–कह थक जाते हैं। फिर भी तो ये समझते नहीं हैं। आगे कहते हैं–

जन्म-जन्म दुख पावत बीते, एक दिन कहीं न चैन लहा।

अब सुनिए–

जन्म-मरण दुख अतिभारा।
पीड़ा हो इतनी कि बिच्छु मारै डंक हजारा।।

घट रामायण में तुलसी साहब बताते हैं कि जन्म–मरण की इतनी पीड़ा होती है जितनी कि एक हजार बिच्छु डंक मारते हैं। तुम देखते हो कि आंखों में पानी आ जाता है। टट्टी–पेशाब निकल जाते है।

ऐ प्रेमियो, सत्संगियो! संतमत यही तो एक तजुर्बा बताता है और सन्तमत की यही सबसे बड़ी शिक्षा है अगर तुम सुनते हो और काल से बचना चाहते हो तो। काल से बचने के लिए अपने मन की बैठक इस छठे चक्कर पर बना लो। इस पर अगर मन की बैठक बना लोगे तो काल से बच जाओगे। पर तुम बच नहीं सकते हो। क्योंकि कोई तो विषय–विकारों का आशिक है। उसके मन की बैठक इन्द्रियों पर है। कोई जीभ का चटोरा है उसके मन की बैठक जीभ पर है। किसी के मन की बैठक कानों पर है क्योंकि वह रागों के सुनने का दिवाना है। कोई देखने का आशिक है तो उसके मन की बैठक आंखों पर है और जो ज्यादा विकारी है तो उसके मन की बैठक त्वचा पर रहती है। सो तुम्हारे मन की बैठक इन्द्रियों पर रहती है। आखरी वक्त में वहीं से प्राण निकलेंगे क्योंकि मन तो उनका राजा बना बैठा है। जिस जगह पर मन की बैठक है वहीं से प्राण निकलते हैं। इसीलिए महात्मा कहते हैं–अपनी मन की वत्ति को ऊपर ले जाओ। ये मैं तुम्हारे शास्त्रों की बातें कहता हूं और फिर जिसे संतमत का एक बार उपदेश मिल गया है वह नर्कों से बच जाता है। उसे अवश्य ही आदमी का चोला मिलता है। कई लोग मखोल करते हैं। मैं भी मखोल किया करता था। पर मैंने तुम्हारे सनातन धर्म की पुस्तकें सुनी हैं। संतमत की बातें सुनी तो मेरी चौंध खुल गई। वास्तव में हमारे हिन्दू ग्रंथों ने ठीक बताया है कि जिस इन्द्री पर मन की बैठक है, वहीं से, उसी द्वार से प्राण निकलने हैं। इसमें कोई चूक नहीं है। अतः हमें अपने मन की बैठक यानि अपनी वत्ति को छठे चक्कर पर रखना है। फिर भी हम नीचे

गिर जाते हैं। आपको पता होना चाहिए कि जीव की बैठक तीन स्थानों पर रहती है। जागत में छठे चक्कर पर, स्वप्न में कण्ठ में और सुषुप्ति में हदय में होती है। काफी लोग तो हदय की भक्ति को ही बड़ी मानते हैं। सुषुप्ति अवस्था में यहां बैठक होती है और यह उरला ही व्यवहार है। यह तो निचला व्यवहार है इससे आगे चलना है। बल्कि मैं तो यहां तक भी बताता हूं कि तुम नाभि से चार हजार नाम जपोगे तो हदय के वह आठ हजार जपों के बराबर है। कण्ठ से सोलह और जुबान से बतीस हजार नाम जपने के बराबर हैं। जब ऊपर को ले जाओगे तो उस समय तुम्हारी वत्ति ऊपर की ओर चलेगी। जब तुम जुबान से 32 हजार जपते हो तो छठे चक्कर के हजार ही काफी हैं। इससे ऊपर तो धुनि कुदरती होती रहती है। उस जगह पर हमें जाप करने की जरूरत ही नहीं रहती है। वहां तो कुदरती ही जाप होता रहता है उस धुनि को हमने सुनना है। हमें जाप नहीं करना है यह संतमत की पैड़ी है। जब हम जीवित ही अभ्यास करते–करते छठे चक्कर से ऊपर चले जाते हैं फिर हम चौरासी में नहीं आते हैं। हम काल माया से बच जाते हैं और प्रकाश में ही चले जाते हैं। ऐसे हम ऊपर तक पहुंच जाते हैं। जब नीचे उतरते हैं तो नीचे गिर जाते हैं। तो मैं यहीं बात आपको बता रहा था कि इस तरह संतमत का साधन करना। कोई तीन दिन भी अभ्यास कर लेता है तो वह नर्कों से बच जाता है। आपने सुना होगा कि बचता तो वही है जो गुरुमुख हो। पर गुरुमुख उसे ही कहते हैं–

सोना काई न लगे लोहा घुण नहीं खा।
बुरा भला जो गुरु भक्त, कबहु नर्क नहीं जा।।

सतगुरु का भक्त बुरा भला होता ही नहीं है। सोने को काई नहीं लगती और लोहे को घुण नहीं लगता है। गुरु भक्त नर्क नहीं जाता है चाहे वह बुरा हो या भला हो। वह बुरा भला कैसे होता

है? आप इस बात को नहीं समझे होंगे कि वह चाहे कितना ही ऐबी और गिरा हुआ क्यों न हो अपने सतगुरु पर जिसका विश्वास है वह तिर जाता हैं। संतों के वचन में बड़ी ताकत होती है। मेरे महाराज जी एक मिसाल दिया करते थे कि संतों की वाणी हमें ऊपर की ओर उभारती रहती है।

कोई प्रेमी संतों के सत्संग में चला गया। उनका सारी रात सत्संग सुनता रहा। जब उसने होश किया टाइम ज्यादा हो गया था। महात्मा ने छुट्टी की तो उसने चलने की तैयारी की। उस महात्मा ने कहा–बेटा! तू आज नया आया है। सो तू कोई प्रण करके जा। अब तू सत्संग में आया है कोई भी नेम करले। ये माता–बहिनें हरिद्वार जाती हैं तो वहां नेम करके आती हैं। कोई गाजर छोड़ती है, कोई गोभी और कोई आलू छोड़ती है, कोई पेठा छोड़ती है। मेरी माताओ, बहनों और भाइयों! यह सत्संग तो सबसे बड़ा तीर्थ है। अगर तुम छोड़ना चाहते हो तो जो मैं बताता हूं वह चीज छोड़ दो। जारी और बदमाशी छोड़ दो। तब देखो! तिर जाओगे। ये तो छोड़ते नहीं, गाजर और गोभी छोड़ते हो। मुझे खीर खाए 45 वर्ष हो गए हैं। क्या मैं तिर गया? कोई बात थी इसीलिए छोड़ दी थी। मैं आपको कह रहा था कि गाजर, गोभी छोड़ देते हैं, आलू, पालक छोड़ते हैं। छोड़ने की बात तो यह है कि सत्संग में चोरी, जारी, बदमाशी, झूठ बोलना और खोटे कर्म करना छोड़ो। तिर जाओगे। पर हम ये तो कभी भी नहीं छोड़ते हैं।

मैं आपको एक सत्संगी की बात बता रहा था कि उसने सारी रात सत्संग सुना। चलते वक्त महात्मा ने कहा–भाई! कोई नेम तो करके जा। उस भाई ने पूछा कि कौन सा नेम करूं? अब उसको नेम करने के लिए कई बार कहा। वह अनाड़ी था। अब क्या कहूं, वह कैसा था? उसने सत्संग तो देखे ही नहीं थे। महात्मा ने दबाब दिया कि कुछ तो नेम कर। उसने कहा कि बाबा जी! मैंने नेम कर

लिया कि मैं कंकर कभी नहीं खाऊंगा। बाबा जी ने कहा–बस ठीक है। यह नेम तो तुम्हारा पक्का है? उसने कहा–यह नेम पक्का रहेगा। अब ये बातें क्यों कही? हमारी माता जी बड़ा प्यार किया करती थी। जब तक वह जीवित रही मैंने अपनी मां का प्यार उसमें देखा था। इतना प्यार तो देखा ही नहीं। उस प्रेमी की बहनें तीन चार थीं और एक भाई खुद था। उन बहनों ने खीर बना रखी थी। उन्होंने वह खीर थालियों में डाल ली। बहिनों ने कहा कि भाई तो आया नहीं, इसलिए हम तो खाएंगी नहीं। भाई आएगा तभी रोटी खाएंगी। उस भाई को रात के 10–11 बज गए। वह भाई आया और आकर बैठा। एक बहन ने कहा–भाई रोटी खा ले, खीर तो बहुत देर से ही ठण्डी कंकर हो गई है। उसने कहा–मैं तो आज ही यह नेम करके आया हूं कि कंकर नहीं खाऊंगा। सो मैं तो खीर नहीं खाऊंगा। बहनों ने भी कह दिया कि अगर तू नहीं खाएगा तो हम भी नहीं खाएंगी। इसीलिए वह खीर वापिस कढ़ाई में डाल कर ढक कर रख दी। भाई के लिए ताजा दूध निकाल कर खीर बना दी और बाकियों को वही खीर डाल दी तो उस खीर में हड्डी निकल आई। वह तो कढ़ाई में बनाई थी और उसमें कोई सांप पड़ गया था। वहां छप्पर था उसमें से कढ़ाई में सांप गिर पड़ा। अब उसकी ये हड्डियां देख ली। उन्होंने अपने भाई से कहा–आज तो तूने हमारे ऊपर दया कर दी। भाई ने पूछा कि क्या दया की? बहनों ने कहा–अगर तू यह नेम नहीं करके आता तो आज सारे ही खीर खाकर मर जाते। इस खीर में तो सांप गिर गया था जब यह खीर बन रही थी। अगर तू इस खीर को खा लेता तो सारे ही मरते। भाई ने जब यह बात सुनी तो वह दौड़ कर उस महात्मा के पास गया। उसके पांव पकड़ लिए और कहा–महाराज! आपकी तो तुक–तुक में भलाई है। आप लोग तो भला ही करने के लिए आए हो हम ही नहीं समझ सकते हैं।

महात्मा ने पूछा–किस तरह से बेटा? उस लड़के ने कहा–बात ऐसे हुई, मैंने खीर नहीं खाई। खीर कढ़ाई में बनाई थी और इसमें जब यह बन रही थी सांप गिर पड़ा था। ये छप्पर से गिरा था और किसी ने उसको देखा नहीं इसके अंदर ही यह मर गया था। जब सुबह खीर डालने लगे तो सांप की हड्डियां दिखाई पड़ी। रात को तो ये नहीं दिखनी थीं। सुबह ये दिखाई दे गई। उसमें से हड्डियां निकल आई और समझ गए कि यह तो सांप था। उस खीर को हमने जमीन में दफना दिया। हम ने खाई इसीलिए नहीं कि मैं आपके पास यह कह कर गया था कि कंकर तो मैं नहीं खाऊंगा कभी भी। घर जाते ही बहनों ने कहा–भाई! खीर तो कंकर की तरह ठण्डी हो गई है।

सो कोई भी नेम कर लो वही काम दे जाता है। महात्माओं के पास जाकर कुछ न कुछ लेकर ही आना चाहिए। उसी महात्मा के पास जाना चाहिए, जिससे तुम्हारा प्यार हो और वह परमात्मा तुल्य दिखता हो और उसे परमात्मा समझते हो। अगर तुम्हारा विरोध है और उसके पास जाते हो तो उसकी गन्दी रेडीएशन तुम्हें खा जाएगी। अगर तुम उसे परमात्मा समझते हो तो उसकी पवित्र रेडीएशन तुम्हारी पवित्र रेडीएशन से टकरा कर अगर कुछ गंदी रेडीएशन भी है तो उसे भी पवित्र कर देगी। आप पूछोगे कि हमारी गंदी रेडीएशन को कैसे पवित्र कर देगी। क्या आपने देखा नहीं है कि संतों की शरण में जाकर बड़े–बड़े पापियों ने पाप करने छोड़ दिए। कुछ एक तो मैं भी आप लोगों को बता सकता हूं। कितने ही आदमियों के इतिहास बन गए हैं। हमारे गांव के भी ऐसे आदमी थे कि उनसे लोग डरा करते थे। जहां से भी वे निकलते थे तो लोग यही कहते थे कि यह कोई न कोई चीज उठा कर ले गया है। अब सारे गांव में यही कहते हैं कि जिन्दगी बन गई है। वाल्मीकि क्यों सुधरा? और फिर आज असंख्य वाल्मीकि सुधर रहे

हैं। सो सत्संग में आकर पापी भी पार हो जाते हैं। सत्संग की महिमा बड़ी भारी है। सो मैं आपको स्वामी जी के शब्द की व्याख्या कर रहा था।

देख-देख मैं गति या जग की बार-बार यों वर्ण कहा।

इस मन की गति देख कर बार–बार वर्णन किया। इस मन की कौन सी गति देख कर वर्णन किया? यह कौन सी गति थी? यह मन कभी तो तीर्थों पर घूमता है, कभी मंदिरों में जाता है, कभी ये सेढ़ शीतला पर जाता है, कभी यह संतोषी माता के पास जाता है, कभी शिव जी के पास जाता है। बड़े–बड़े तीर्थों पर जाता है। इसकी समझ में एक भी बात नहीं आती है। फिर भी चक्कर में ही पड़ा रहता है और कर्मकाण्ड में पड़कर अपना जीवन बर्बाद कर लेता है। बल्कि सच पूछा जाए तो इनसे अच्छा यदि ये किसी महात्मा की शरण ले लेता तो तिर जाता। जो जिंदे जागते चलती फिरती गंगा हैं उसके पास जाने में तो नफरत करते हैं और जो बोलती नहीं है, चलती नहीं है उनके ही पास में जाते हैं। आप बताओ कैसे तिरोगे? मेरा तो सबसे बड़ा कहना यही है कि सबसे बड़ा धर्म मां–बाप और बुजुर्गों की सेवा ही है। यही बताता हूं। अब बताओ। तुम मूर्ति की दो घंटे पूजा करते रहो। वह तो नहीं बोलेगी और यह जो बूढ़ा साधु आया है जो नब्बे से भी तीन चार वर्ष ऊपर का है इससे प्यार करोगे तो यह कितना आशीर्वाद देगा? सो मेरा विचार तो ऐसा है कि मैं परमात्मा के बनाए हुए मंदिरों की इज्जत करता हूं। अपने बनाए हुए मंदिरों की भी इज्जत करता हूं। इनको भी बिगाड़ता नहीं। पर परमात्मा के बनाए मंदिरों की भी इज्जत किया करो। गरीबों की मदद करना सीखो। तुम मन की गति में मत बहा करो। मन की गति को छोड़ दो। मैं इस मन की गति में बड़ा भारी बहा हूं। पर मैं पूरा नहीं चला। राह ही चला अगर उनमें फंसा रहता तो कुमार्गी बन जाता। मैंने बड़ी भारी आरतियां

उतारी। इतनी आरतियां उतारी कि जब मैं आरतियां उतारता था तो वैरागी साधु देखा करते थे। वे कहते थे कि कितनी शानदार आरतियां उतार रहा है। बड़ी भारी मालाएं फेरी। गायत्री भी बड़ी भारी जपी। भगवान देव आचार्य से गायत्री सीखी। बड़े प्राणायाम किए। धोती की क्रियाएं की। दो–दो किलो पानी नाक से पीकर मुंह से निकाल देता था। पानी से गज क्रिया भी करते थे। पानी वापिस निकाल दिया करते थे। पता नहीं कितने कौतुक किए। सो मैं बता देता हूं सभी कर्म किए। मैं अपने मन की गतियां बताता हूं। क्योंकि यह मन बड़ा जालिम है।

साधो यह मन है बड़ा जालिम।
जिसका पड़ा मन से वास्ता, उसी को है मालुम।।

इस मन की गति इतनी भारी है। जब कोई भेदी महात्मा मिल जाता है तो जीवन सुधर जाता है और मन भी अपनी बुरी आदत को छोड़ देता है। बुरी आदत को छोड़ कर आगे चल पड़ता है। आगे कहते हैं–

जन्म-जन्म दुख पावत बीते, एक छिन कहीं न चैन लहा।
पाप-पुण्य बस विपता भोगी, नहीं सतगुरु की शरण गहा।।

इसीलिए कहते हैं कि जन्म–जन्म अपने कर्मो का भोग भोगते रहे। कर्मों के कारण जन्म लिए और मरते रहे। कई भाई पूछते हैं कि कर्म पहले बना था कि शरीर पहले बना था। यह दोनों का जोड़ा है। शरीर से कर्म बनता है और कर्म से शरीर बनता है। आप लोगों को खुल कर सत्संग कराता हूं। मेरे पास एक भाई आया और उसने कहा–महाराज जी! मानस का चोला तो परमात्मा की दया से मिलता है। ये तीन दया होती हैं। मैंने पूछा–ये तीन चार किस–किस की दया होती हैं? उसने कहा–पहली दया परमात्मा की कि आदमी का चोला दिया। दूसरे हमारे शास्त्रों की दया कि हमारा संग अच्छा रहा, तीसरे सतगुरु की दया जो नाम

मिला। अब मैंने कहा–और सब ही दया मान लूंगा परमात्मा की दया को मैं नहीं मानता हूं। क्या आप लोग इसे मान लोगे? मेरी ये बात घटिया दिखती होगी कि मैं परमात्मा की ही दया को नहीं मानता हूं। पर मैं आपके शास्त्रों का हवाला देकर बताऊंगा। मैं परमात्मा की दया कैसे मानूंगा? परमात्मा की दया तो मान लेता पर तुम जैसे काम करते हो वैसा ही चोला मिलता है। जैसा भी कर्म करते हो उसके भोग को भोगना पड़ेगा। उसे कोई बदल ही नहीं सकता है। अगर उस कर्म को परमात्मा बदलता हो तो मान लूंगा। सो मानस चोले में आकर भी अपने खोटे कर्म तो हमें भोगने ही पड़ते हैं।

कर्तुभ्यम् सो भवितुम्यम।

जो जैसा कर्म करते हैं वैसा ही हमें चोला मिलता है। इसीलिए मेरे विचार तो यही है कि चोला प्राप्त करने में परमात्मा को कोई भी लेना देना नहीं है। चाचा साधूराम बड़े समझदार हैं और इन्हें पता है। बड़े ग्रंथ पढ़े हैं। बाल की खाल काढ़ी है। मैंने मेरे अपने विचार बताए हैं। सो फिर भी कहता हूं कि जो सतगुरु चाहता है वह तो कर ही देता है। संत सतगुरु सूली की सूल बना देता है। आप कहोगे कि कोई प्रमाण बताओ। मैं तुम्हें कितने प्रमाण बताऊं? आपने सुना होगा–

पलटू लिखा नसीब का, संत देत हैं फेर।
जो दिल सांच हो आपने, पलक न लागे देर।।

वही साधु महात्मा आगे कहते हैं–

उधौ! कर्मों की गति टाले नाहिं टलै।
वशिष्ठ मुनि सुर ज्ञानी, लिख लिख लग्न धरै।।
सिया हरण, दशरथ मरण, बन-बन राम फिरै।
उधौ! कर्मों की गति टाले नाहिं टलै।।

अब आप बताओ कि कर्मों की गति कैसे टले? दूसरा यह भी

कहता है कि संत सूली की सूल कर देते हैं। मैं उन्हीं की कहता हूं और वे जानते भी हैं कि क्या होने वाला है और क्या बनने वाला है। मुझे याद नहीं, कल ही मेरे पास एक प्रेमी बैठा हुआ था। मैंने कहा–टयूबवैलों के तो बड़े अच्छे गेहूं हैं। आपके कोई कमी तो नहीं है। कौन था मुझे यह तो पता नहीं। उसने कहा–क्या आपने हमारे खेत देखे हैं? किसी ने कहा–यही तो तुम्हारे अंदर कमी है। पहलवान ने कहा होगा। मेरी जुबान से कुदरती ही यह बात निकल गई।

साधु बोले सहज स्वभाव, साधु का बोला मिथ्या नहीं जा।

इसीलिए मैं आपको ये बातें बताता हूं कि संतो का मार्ग करणी का मार्ग है। बातों का मार्ग नहीं है। जो पूर्ण संत सतगुरु होता है वह अपने शिष्यों की सूली की सूल बना देता है। पर ये लोग घबराते हैं और कहते हैं कि यह क्यों घटित हुआ? अरे भले आदमियों! यह कर्म तो भोगना था और काटना था। मेरे महाराज शिवव्रतलाल जी की कही हुई मिसाल याद आती है।

राजा भोज की एक कथा आती है। राजा भोज के आगे किसी ने शिकायत कर दी कि घोड़ों के नौकर घोड़ों को पूरा दाना नहीं डालते हैं। वे घोड़ों का दाना बेच देते हैं। अब राजा खुद ही चला गया। घुड़साल में दाना तोल–तोल कर देने लगा। मैंने तो महात्माओं से ये मिसालें सुनी हैं। शिवव्रतलाल जी का लेख भी मिला था। राजा भोज ने कहा–घोड़ों का दाना तोल कर मैं दूंगा। तुम इसको डालो। जब वह दाना तोल कर डालने लगा इतनी ही देर में एक महात्मा आ गया। महात्मा ने कहा–राजन! मैं भूखा हूं। मुझे कुछ दे दो। राजा भोज ने कहा–महाराज! आप नगरी में जाओ यह तो घोड़ों का घुड़साल है। उसने कहा–राजन! मैं भूखा हूं। मुझ से चला नहीं जाता है। आप कुछ तो दे दो। राजा ने कहा

मैं कह तो रहा हूं कि तू नगरी में चला जा। यहां नहीं मिलेगा कुछ भी। अब आप बताओ, विनाश काल में बुद्धि ही विपरीत हो जाती है। राजा भोज इतना अच्छा था, पर क्या वह उसको एक मुट्ठी दाने नहीं दे सकता था? कह देता कि मेरे पास तो यही हैं। पर नास्तिक टाइम आता है तब आदमी गिर जाता है। उसे अपना पराया कुछ भी नहीं दिखता है। अब ज्यादा उस महात्मा ने हठ किया तो राजा ने उस महात्मा को एक अंजली लीद की डाल दी। उसने कहा–अगर तू मरता ही है तो इसे खा ले। वह महात्मा लीद ले कर उसी को फांकता हुआ चला गया। अब राजा के दिल में ख्याल आया कि महात्मा तो भूखा था। उसने आज्ञा दी की जाओ उस महात्मा को ढूंढ कर लाओ। नौकर भाग कर गए तो वह महात्मा नहीं मिला। उन्होंने आकर कहा–महाराज! वह तो नहीं मिला। राजा ने कहा–ये तो जुल्म हो गए। वह महात्मा नहीं था। कोई परमात्मा ही था। राजा जब अपने घर आया और शाम को घूमने निकला तो महात्मा एक चौराहे पर चौक में बैठा था। उसके पास चार–पांच आदमी बैठे थे। राजा ने देख लिया कि यह तो वही महात्मा है। राजा हाथी पर सवार था। वह वापिस आया। हाथी को बांध दिया और पुराने मैले कपड़े पहनकर उसके पास आ बैठा। उसके सत्संग को सुनता रहा। रात के दस बज गए। सभी चले गए। महात्मा ने कहा–प्रेमी! आप भी जाओ। राजा ने कहा–महाराज! मैं कहां जाऊं? राजा का हुकम ही ऐसा है कोई मुझे आवारागर्दी में पकड़ लेगा। मैं तो आपके पास ही ठहर जाऊंगा। महात्मा ने कहा–मैं अपने पास ठहरने ही नहीं देता हूं। राजा ने कहा–नहीं महाराज, मैं कहां जाऊं? मैं तो यहीं ठहरूंगा। महात्मा ने कहा–फिर तू उधर उस कौने में छुपकर बैठ जा। वह दूर जा कर बैठ गया। रात के 12 या 1 बज गया। कहते हैं कि उस वक्त एक विमान आया और विमान के नीचे उतरते ही महात्मा उस

विमान में बैठ लिया। जब वह विमान ऊपर की तरफ चला तो राजा ने भी उस विमान का पाया पकड़ लिया। वह उसी के साथ लटकता हुआ स्वर्ग में चला गया। अब स्वर्ग में जाकर महात्मा जी उतरे तो राजा को एक तरफ खड़ा देखा। महात्मा ने कहा–तू यहां क्यों आ गया? राजा ने कहा–जब आप आ गए तो मैं कहां रहता पीछे। महात्मा ने कहा–अच्छा! तू आ जा तुझे मैं स्वर्ग दिखा कर लाता हूं। राजा ने कहा–चलो, महाराज जी! अब वह राजा स्वर्ग देखने के लिए गया तो उसने देखा कि यह तो राजा कर्ण का महल है। यह राजा मोरध्वज का महल है। यह राजा हरिशचन्द्र का महल है। महात्मा ने उसको बड़े–बड़े दानियों के महल दिखाए। राजा ने पूछा–यह किसका महल है? महात्मा ने कहा–यह राजा भोज का है और यह राजा भोज का बाग है। राजा ने कहा महाराज क्या आप इस राजा भोज के महल को खोल कर दिखा सकते हो? महात्मा ने कहा–हां! दिखा दूंगा। उसको खोल कर दिखाया तो कहीं पर तो चावल भरे थे। कहीं घी भरा था। जो कोई एक पैसा देता है तो मालिक को उसके बदले में हजार देने पड़ते हैं। ये मेरा तजुर्बा है। एक दिन मैं बैठा हुआ था तो किसी को मैंने तीन सो रुपये दे दिए। उसने सोचा कि मैं देखूंगा कि किस तरह हजार गुणा बनते हैं? एक सैकिण्ड भी नहीं हुई थी कि किसी ने मुझे छः सौ दे दिए। क्या सोचते हो? आपने सुना होगा कि किसी वक्त पर बाबू छाजू राम के पास कोई चौधरी चला गया। अब मैं उसके गांव का नाम ले दूंगा तो कई तो चिढ़ जाएंगे। उस चौधरी ने पूछा कि बाबू छाजूराम! तेरे पास इतना धन क्यों हैं? यह धन मेरे पास तो नहीं है। बाबू जी ने कहा–धन तो तेरे पास भी हो जाएगा। हम आपको बता देंगे। उसने कहा–आप बताओ। बाबू जी ने पूछा कि तेरे पास अनाज कितना है? चौधरी ने कहा–मेरे घर दो कोठे तो चने के भरे हैं। बाबू जी ने पूछा–पूलियां

कितनी हैं? चौधरी ने कहा–ये पूलियों के छौर हैं। बाबू जी ने कहा–ये पूलियों के छौर तो गौशाला में भिजवा दे। इन चनों को गरीबों में बाट दे। अगर इससे चौगुना धन हो जाए तो मेरे पास आ जाना। चौधरी ने कहा–यह काम तो मैं नहीं कर सकता हूं। बाबू जी ने कहा–अगर तू यह नहीं कर सकता है तो धन भी इतना नहीं हो सकता है। सो मैंने एक शिक्षा ली थी मेरे गुरु महाराज से कि अगर दोगे तो ही लोगे। जैसा दोगे वैसा लोगे। तुम किसी को गाली दोगे तो गालियां मिल जाएंगी। प्यार दोगे तो प्यार मिलेगा। इज्जत दोगे तो इज्जत मिल जाएगी। यह आपको पता हो कि जैसा दोगे वैसा ही लोगे। तुम कितना ही पर्दा रख लो फिर भी आत्मा–आत्मा का साक्षी होता है। वह आत्मा अपने आप ही बोल उठती है। सो जैसा दोगे वैसा ही लोगे।

अब उसने वह सारा महल दिखा दिया। बड़ा भारी महल था। राजा ने कहा–इस आखरी कोठे को भी दिखा दो। महात्मा ने वह भी दिखा दिया। देखा वह कोठा लीद का भरा था। राजा भोज बेचैन हो गया। राजा ने पूछा–महाराज! यह लीद कहां से आई है? महात्मा ने कहा–राजा है। उसने किसी वक्त पर इसका भी दान किया होगा। दान किया गया है तो उसका हजार गुणा हो जाता है। किसी वक्त दान में लीद भी दी है। राजा ने पूछा–इस लीद का क्या बनेगा? महात्मा ने कहा–जैसे अगले गरीब ने इसका जो कुछ भी किया, राजा को भी उसी तरह से बरतनी पड़ेगी। राजा मन में घबरा गया कि यह तो जुल्म हो गया। एक अंजुली तो इसने खा भी ली पर यह कोठा लीद का कैसे खाया जा सकता है? अब आप समझो कि महात्मा लोग कर्म की रेख पर मेख मारते हैं।

मैं आपको बताता हूं। महात्माओं को कर्म काटने आते हैं। वह राजा वापस आ गया और आकर बैठ गया। उस विमान से उतरते ही राजा भोज ने उस महात्मा के पांव पकड़ लिए। महात्मा ने

कहा–क्या बात है? राजा ने कहा–मैं ही राजा भोज हूं और वह कोठा लीद का मैं तो नहीं खा सकता हूं। मेरे ऊपर आप दया कर दो किसी भी तरह। महात्मा ने कहा–हम महात्मा हैं और हमें कर्म काटने आते हैं। मैं जैसे कहता हूं उसी प्रकार से करना। क्या तुम्हारे घर का कोई ब्राह्मण है? राजा ने कहा–हां! मेरे घर का एक ब्राह्मण बहुत ही अच्छा है। महात्मा ने कहा–क्या ब्राह्मण की कोई कुंवारी लड़की है? राजा ने कहा–एक लड़की है वह सोलह या सतरह वर्ष की। महात्मा ने कहा–उस लड़की को जबरदस्ती अपने घर में ले आ। पर ओ पगले! उसे अपनी धर्म की बेटी बनाकर लाना। तुम उसे लाकर उसकी आरती उतारना। पर लोग तो यही समझें कि जबरदस्ती उठा कर ले गया है। जैसे देवी की आरती उतारी जाती है ऐसे ही आरती उतारनी है। बड़े धर्म के साथ उसे रखना। फिर तू मेरे साथ बात करना। अब वह उस लड़की को ले आया। सारे शहर में शोर शराबा हो गया कि राजा बड़ा अन्यायी है, राजा बड़ा अन्यायी है। ब्राह्मण की लड़की को जबरदस्ती घर में ले गया। आपने भी सुना होगा कि दूसरों की निंदा करने वाले बिष्ठा उठाते हैं। कहा–

निंदक मेरा मत मरो जीओ आदि जुगादि।
हम तो ये पद पाइया, निंदक के प्रताप।।

मेरी खिलाफत में एक बार बड़ा भारी जलसा हुआ था। मैं घबरा गया। मैंने रतीराम से कहा–भाई ये तो बुराई करते हैं बहुत बुरी–बुरी। इसकी बात ने मेरी मदद की। इसने कहा–हमारी कौन बुराई करता है? क्या बात हुई? अगर हमारे अंदर ऐब होंगे तो हम छोड़ देंगे और अगर ये झूठी बुराई करेंगे तो अपना कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। मेरे दिल में शांति आ गई।

एक बार मेरे सत्संग में हलचल मच गई। मेरे सत्संगी कई बड़े–बड़े महंत थे वे धोखा दे गए। उनके नाम तो नहीं लूंगा। वे

चले गए। मैंने कहा कि सत्संग तो अब बिगड़ जाएगा क्योंकि वे इधर–उधर के तो चले ही गए। वहां अमर चंद बैठा था। इसने कहा–यह सत्संग अगर बिगड़ेगा तो राधास्वामी दयाल का बिगड़ेगा और सुधरेगा तो राधास्वामी दयाल का। आप चिंता क्यों करते हो? इसको कहते हैं–

अकेला साधु शूरवीर, दूसरा बंधावै धीर।
तीसरे में खटपट, और चौथे में बाजैं लठ।।

पर उस राजा ने क्या किया, उस लड़की को अपने घर में उठा लाया। उसकी आरती उतारी और देवी की तरह से पूजा की। एक महीना बीत गया। वह राजा महात्मा के पास गया। महात्मा ने पूछा कि सुनाओ, क्या बात है? राजा ने कहा–महाराज! मेरी बुराई हद से ज्यादा हो रही है और बहुत शोर मचा हुआ है। अब उसने उसको कहा कि चल। समाधि लगा। राजा ने समाधि लगाई। महात्मा ने पूछा–क्या वह लीद भी दिखाई दी। राजा ने कहा–हां दिखाई दी है। महात्मा ने पूछा–कितनी रह गई है? राजा ने कहा–थोड़ी सी अंजली भर पड़ी है। सारी बंट गई हैं। सो ये निंदक बिना पैसों के पलदार होते हैं। सारी लीद को बंटवा लेते हैं ये निंदा करने वाले। मेरी तो उन्नति ही इन निंदकों ने की। इनका एक दोहा याद है–

निंदक मेरा मत मरो, जीओ आदि जुगादि।
हम तो ये पद पाइया, निंदक के प्रताप।।
निंदक नियड़े राखिए, निंदक ना जा दूर।
जैसे बिष्ठा गांव का, साफ करत हैं सूर।।
निंदक नेड़े राखिए, आंगन कुटी छपाय।
बिन पानी बिन साबुन के निर्मल करै स्वभाव।।

ये बातें मैं महात्माओं के लिए बताता हूं। हम गहस्थियों का तो सारा ही जग बहा जा रहा है। एक सुनोगे तो सतरह सुनाओगे।

पर संत का तजुर्बा तो यही है कि संत है तो सहन करना सीख लो। सत्संगी है तो कोई बरदाश्त करना सीखो। जो एक सुनकर सतरह सुनाता है वह सत्संगी नहीं है। तब तुम्हारी मालिक मदद नहीं करेगा, कभी भी। अगर तुम मालिक का सहारा लेना चाहते हो और उसकी मदद लेना चाहते हो तो मेरे जैसे विचार बनाओ। मैं तो दीवार की तरह बना खड़ा रहा। मैंने कहा–जो मालिक करेगा अच्छा ही करेगा। सो उसी का भरोसा किया उसी पर सब कुछ छोड़ दिया। उस ने मेरी मदद कर दी। सो वह परमात्मा ये कहता है–

तू सरकेगा एक डंग, मैं सरकूंगा डंग आठ।
तू करड़ा होय रहै, तो मैं हूं करड़ा काठ।।

वह मालिक कहता है कि अगर तू मेरी ओर एक पग भी बढ़ाएगा तो मैं आठ पग बढ़ाऊंगा और अगर तू आठ पग बढ़ा देगा तो मैं तुझे गोदी में उठा लूंगा। उसने ध्रुव प्रहलाद उठाए। उसने मीरा को गोद में उठाया। सहजो बाई उसने उठाई। कितने उदाहरण दूं? जितने भी महात्मा हुए हैं सभी उठाए। वह परमात्मा बड़ी–बड़ी दया करता है। अजामिल जैसे पापी भी उसने सुधारे। सो महात्मा को राजा ने बता दिया कि एक अंजली भर लीद रह गई है। राजा ने कहा–महाराज! मैं तो यह भी नहीं खा सकता हूं। आप किसी भी तरह बख्श दो। उसने कहा–पगला! मैंने भी तो खाई थी। राजा ने कहा–आप तो महात्मा हैं। आपने तो खा ली। पर मुझ से नहीं खाई जा सकती है। इसे ही कहते हैं कि संत सूली की सूल कर देते हैं। महात्मा ने कहा–तू जा, तेरी नगरी में एक रविदास महात्मा है। अगर रविदास महात्मा ये कह दे कि राजा अन्यायी और पापी है तो चलो वह लीद भी तेरी बंट जाएगी। राजा ने कहा–उससे तो मैं कहलवा लूंगा। महात्मा ने कहा–अगर तू कहलवा लेगा तो तेरा काम बन जाएगा। अब राजा अपना वेष

बदल कर उसके पास गया। पर एक बार मेरे दिल में यह भी आया था कि रविदास कब हुआ और राजा कब हुआ? पर हमारे एक सरदारा है उर्दूवाज। उसने कहा कि ये तो दोनों इकट्ठें हुए हैं और उसी सदी में ही राजा भोज हुआ। फिर तो ठीक है मैंने कहा। उसने इस बात की पुष्टि कर दी थी। अब राजा टूटी जूती और मैले कपड़े पहन कर रविदास के पास जा बैठा। उसने बातें की और कहा कि महाराज! मेरी जूती गांठो। उसने कहा–ला गाठ दूंगा। उसने कहा कि महाराज! तेरी नगरी का राजा बड़ा अन्यायी है। रविदास ने कहा–होगा। हमें क्या मतलब है? समझो! मैं क्या कहता हूं? अगर तुम दूसरों की निंदा में हुंकारे भरते हो और हां में हां मिलाते हो तो वह तुम्हारे ऊपर पाप छोड़ जाता है। अगर तुम मेरी बात को नहीं मानते हो तो तुम कोर्स करके देख लो। जिन दरवाजों में बैठकों में दूसरों की निंदा होती है वे ऊजड़ जाते हैं। जिन डेरे, मंदिरों, गुरुद्वारों में जहां दूसरों की निंदा की जाती हैं, वे खत्म हो जाते हैं क्योंकि निंदक के सिर पर सारे पाप आ जाते हैं। सो रविदास ने कहा–भाई! मुझे तो पता नहीं। राजा होगा, मेरा राजा से क्या ताल्लुक। उसने निन्दा नहीं की। उसने फिर कहा कि–राजा ने बड़ा जुल्म किया कि ब्राह्मण की लड़की उठा ली। इससे बड़ा जुल्म क्या होगा? रविदास ने कहा–हमें तो न राजा से कुछ लेना है और न ही ब्राह्मण से। हम अपना काम करते हैं। तीसरी बार पुनः उसने कहा–इससे बड़ा जुल्म क्या होगा? राजा के लिए तो ये सबसे बड़ा जुल्म है। रविदास ने राजा के मुंह पर थप्पड़ मारा और कहा–वह अंजली भर लीद तुझे खानी पड़ेगी। मैं नहीं खाऊँगा। जा चला जा। राजा ने यह बात सुनी और वह महात्मा के पास आ गया। वह महात्मा तो बहुत तगड़ा था। सौ वर्ष के करीब उसकी आयु होगी। राजा ने उसके पास आकर उसके चरणों में सिर टेक दिया। महात्मा दयालु होते हैं। अगर तुम

महात्मा से कुछ लेना चाहते हो तो अपना घमण्ड त्याग कर चरणों में सिर टेक दो। वे सब कुछ दे देते हैं। करोड़पति तुम्हें सौ रूपये नहीं देगा। चरणों में सिर टेकने से। महात्मा अपनी वह कमाई दे देता है कि वह स्वर्ग और बैकुण्ठों से भी उल्टा आ जाता है। बल्कि वह राधास्वामी धाम से भी वापिस आने की कोशिश कर लेता है अपने प्यारों के लिए। महात्मा–महात्मा ही होता है। वह पराये दुख भंजक होता है। उसके पास आकर चरणों में सिर टेक कर कहा–महाराज! मैं वह लीद नहीं खा सकता हूं। रविदास ने तो निंदा नहीं की। उसने नहीं बटवाई। आप दया करो। आप चाहे किसी तरह करो। महात्मा ने कहा–तू ठहर जा, करेंगे। महात्मा ने कहा उस सारी लीद को तू फूंक लेना, इसकी भस्म बना लेना और इसको बारीक पीस लेना। इसको पानी में मिलाकर पी लेना। यह कष्ट नहीं देगी। सो महात्मा ने सूली की सूल बना दी। उस लीद का रास्ता निकाल दिया। पर जो महात्मा, साधु–ऋषि मुनि हुए हैं उन्होंने तो सूली की सूल नहीं बनाई क्योंकि वे तीन गुणों की भक्ति में ही फंसे रह गये हैं। पर संत तो तीन गुणों की भक्ति से आगे निकल जाते हैं। इसीलिए उनको संत कहा जाता है। संत का हदय साफ होता है। साधु का हदय लाल होता है। वह क्रोध में ही रहेगा और श्राप देता रहेगा। सत्संगी का हदय हरा होता है और संसारी का हदय काला होता है। वह धोखेबाज मिलेगा। पर आज कल के सत्संगी भी संसारी जैसे गिरे हुए हैं। सत्संगी–सत्संगियों को ही देखकर खुश नहीं होते हैं बल्कि नाराज हो जाते हैं। सत्संगी को तो बेहद प्यार करना चाहिए। चाहे कोई भी हो, है तो सत्संगी ही। है तो आस्तिक, नास्तिक तो नहीं है। हमें प्यार करना चाहिए। कभी न कभी उस लाइन में भी आ जाएगा। सो ही मैंने बताया कि तुम यह देखो कि सब जग जात बहा। इस मन की गति के बड़े–बड़े कुकर्म हैं इसके बारें में क्या कहा जाए और क्या न

कहा जाए? आगे कहते हैं–

अब ये देह मिली कपा से, करो भक्ति जो कर्म दहा।

अब! यह कितनी बड़ी बात कही है, यह आदमी का चोला बड़ा कीमती है। इसके लिए तो देवी–देवता भी तरसते हैं। काफी बार मैं तुम्हारी रामायण का हवाला देकर बताया करता हूं। यह कितनी अच्छी बात है–

बड़े भाग मानुस तन पावा। सुर दुर्लभ सद् ग्रंथन गावा।।

देवी देवता भी इस आदमी के चोले को तरसते हैं और यह इतना कीमती टाइम मिला हुआ है। इसे तुम पशुओं की तरह बर्बाद कर रहे हो। अपनी मान–बड़ाई और अहंकार में आकर अपना सारा जीवन बर्बाद कर देते हो। हम इस आदमी के चोले को इस तरह से बर्बाद करते हैं कि हम संभलते ही नहीं हैं। सब से बड़ा पापी तो वही है जो अपनी आत्मा को धोखा देता है। इससे बड़ा पापी कोई भी नहीं है। पर आत्मा को धोखा कौन देता है? क्या तुम्हें कोई मिसाल याद है? आत्मा तो सतपुरुष की एक किरण है और उसको हम धोखा देते हैं तो इससे बड़ा पापी कौन है? वह इसे धोखा कैसे देता है? इस आत्मा व इस किरण को इस पवित्र चेतन शक्ति को हम मैली किस तरह से करते जा रहे हैं? तीन युगों की तो मैंने बातें बताई भी हैं। इस युग में तो सतगुरु की भक्ति से ही तीनों आवरण उतरते हैं। अगर कोई तार सकता है तो। पर तुम किस तरह से करोगे? कोई बोलना भी चाहे तो बोल लेना कोई बात नहीं। अपनी आत्मा को तो मैली वही करते हैं जो रात और दिन शराब में ही जुटे रहते हैं। शराब नशा सबसे बुरा है।

शराब नशा सब से बुरा, खाना पड़े कबाब।
जारी का पेशा करैं, वे करते खड़े पेशाब।।
शराब नशा सब से बुरा, पड़े कुसंग के राह।
अपनी औरत को कह रहा, तू है मेरी मां।।

महाराज जी एक मिसाल दिया करते थे। हमारे गांव में कोई जमींदार खेत में था, वह शराब पीए बैठा था। उसकी घर वाली वहां चली गई। उसने उसको कहा–तू आ गई क्या मेरी मां? उसने कहा–हां! तू तो जी लिया पूतड़ा, खसमड़ा। तू तो थोड़े ही दिन जी सकेगा। यह हालत हो जाती है। इसीलिए शराब सबसे बुरी चीज है। छप्पन करोड़ यदुवंशी इससे खत्म हो गए। सो हम अपने मन की आदत को कैसे बदलेंगे?

मन तेरी आदत नै, कोए बदलै हरिजन धूर।
भांग तम्बाकू अमल छोतरे रहैं नशे में चूर।।

कोई महात्मा साधु ही मन की आदत को बदल सकता है। पर मैं आप लोगों को कई बार कह दिया करता हूं कि मैंने तो कभी भी पीकर नहीं देखी है। फिर अगर कोई ज्यादा पीने वाला है तो मेरे साथ कुश्ती कर लो या पंजा कर लो। मैं तो पंजा भी नहीं करना जानता हूं। देखो! अपनी जात न दे देना। मेरी बिगड़ी तो कोई बात नहीं है। यह शराब तो सब से ही बुरा नशा है। इसमें आकर तुम गिरो मत। मेरी प्रारब्ध ही ऐसी है, सबसे पहले मुझे इसी से घणा हुई थी। मैं आर्य समाज में भी गया हूं। आर्य समाज की एक पुस्तक 'धर्म शिक्षा' से यह शिक्षा मुझे मिली थी। आज जो लोग कहते हैं कि आर्य बनो। सच्चे बनो। अरे ! आर्य किसको कहते हो? अगर वह शराब पीता है तो वह आर्य कहलवाने के काबिल नहीं है। वह तो कसाई है। आर्य धर्म तो हमारा पवित्र है। आर्य धर्म हमारा प्राचीन है। हमारे आर्य धर्म के दादू जी थे, कबीर साहब, नानक साहब थे, मोहम्मद साहब, ईशा मसीह थे। किस–किस की बातें बताऊँ? राम और कष्ण भी आर्य थे। इन्होंने कोई भी ऐब नहीं किया। ये सभी आर्य धर्म ही सिखा कर गए। ऋषि दयानन्द भी आर्य थे। पर जो उनकी प्रणाली के होकर भी शराब कबाबों में फंसे पड़े हैं उनको क्या आप आर्य कहोगे? वे आर्य धर्म का प्रचार

नहीं करते हैं, बल्कि गिरते जा रहे हैं। आर्य होकर क्या मुर्गी, मछलियां पालते हैं? क्या आर्य होकर शराबों के ठेके खोलते हैं? क्या आर्य होकर शराब पीते हैं? इससे बड़ा और कोई भी पाप नहीं है। उन्हें आर्य मत कहो कभी भी। अगर आर्य हैं और ये काम करते हैं, तो समझ लो कि वह आर्य नहीं हैं। मैं ये बातें सीधी कहता हूं। मेरी बात को वही सुन सकता है जो पूरा खानदानी शूरवीर होगा। अगर गैर मां–बाप का है तो वह मेरी बात को सुन नहीं सकेगा। क्योंकि वह तो वर्ण संकर है। आर्य नहीं है। आर्य होगा तो, मेरा यह 12 गोलियां का पिस्तौल है, उसको ये 12 गोलियां एक ही साथ लगेंगी और उसी वक्त वह इन ऐबों को छोड़ देगा। सो ही मैं आपको बताता हूं। ये लोग गांव में लोगों को इकट्ठे करते हैं और कहते फिरते हैं कि हम शराब के ठेके बंद करवाते हैं। अरे ! शराब के ठेके यूं तो बंद नहीं हो सकते हैं। मैंने कल छः हजार लोगों की शराब छुड़वा दी। आज तक उन्होंने किसी की छुटवाई है तो बताएं। सो आप संतमत की शरण में आ जाओ और सन्तमत के लक्षणों पर चलो। संतमत की वाणियों पर चलो। तुम संतमत की निन्दा करते हो और काम और करना चाहते हो। संतमत में तो प्यार है। संतमत में प्रेम है। संतमत में आकर तो बहुत ज्यादा काम कर सकते हो और सारा जीवन सफल हो जाएगा। संतमत ही एक पवित्र धर्म है। यही आर्य और सनातन धर्म है। यह ऊंचे से ऊंचा है। सो मैंने आप लोगों को इस मन की गतियों के बारे में बताया।

अब यह देह मिली कपा से, करो भक्ति जो कर्म दहा।
अब की चूक माफ नहीं होगी, नाना विधि के कष्ट सहा।।

यह आदमी की देह मिली हुई है। इसमें अगर चूक गए तो फिर ऐसा टाइम नहीं मिलेगा। यह इतना कीमती टाइम है कि इसमें चूकने के बाद तो कुछ भी नहीं मिलेगा। फिर तो धक्के ही खाने पड़ेंगे। लख चौरासी में जाना ही पड़ेगा। मैं एक बात

कहता–कहता रह गया था। अपने तजुर्बे की है। जो अभ्यासी होगा वह समझ जाएगा। जब सुरत अंतर से निकल कर बाहर चलती है तो उसे सभी चीजों का ज्ञान और ख्याल रहता है उस वक्त वह बात सोचनी चाहिए कि यह निकलने वाली एक वस्तु है। मैं अपने तजुर्बे की बातें ही बताया करता हूं मैं होशियारपुर गया हुआ था। मेरी मुर्दा समाधि लगी हुई थी। मुझे इसका ख्याल भी था। अगर मैं झूठ बोलता हूं तो मेरे शरीर में कीड़े पड़ें। मैं बहुत दूसरे ही ढंग का आदमी हूं। मैं झूठ नहीं बोलता हूं। मैं झूठ क्यों बोलूं? मुझे कोई गर्ज नहीं है। मैं तो अपना तजुर्बा बताता हूं। मैं लेटा हुआ था और मेरे मुंह में से एक सितारा सा निकला। ये रामायण और महाभारत तो बाद में ही सुनी हैं। कई वर्षों की बात हो चुकी है। यह तो परमदयाल जी आए उसी वक्त की बात है। मेरे मुंह में से जब तारा सा निकला तो मैंने सोचा कि तेरे प्राण निकल गए हैं। अब मैंने यह भी सोचा कि यह कहने वाला कौन है कि प्राण निकल गए हैं? और साथ ही यह भी कहता है कि अब तू मर चुका है। तेरा प्राण चला गया है और तेरा शरीर पड़ा हुआ है। चारपाई पर मुर्दा आसन में शरीर है। यह तारा निकल कर बड़ा घूम करके आया। जब यह घूम कर अंतर में आया तो मैंने कहा–प्राण वापिस आ गए हैं। अब मेरे दिल में यह बात आई कि अगर मैं लिखना जानता तो पता नहीं क्या लिखता और क्या नहीं लिखता। मुझे कोई भी पता नहीं है। मैंने सोचा कि यह निकलने वाली कोई न्यारी ही चीज थी, कहने वाली न्यारी चीज थी और बोलने वाला न्यारा था। मैंने ये बातें सोची थीं। ये सब न्यारी–न्यारी चीजें होती हैं। जैसे बिजली के कितने नाम हैं, लट्टू और लैम्प कितने ढंगों के कितने ही नाम बना लो। इसी तरह से ही उस सुरत के असंख्य नाम हैं। जैसे एक लकड़ी का नाम तो गाड़ी नहीं है। बहुत सी लकड़ियां मिलकर गाड़ी बनती है। इसी तरह चेतन शक्ति जब शरीर में

आती है वह तीन गुण बनाती है–रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण। वह पांच तत्व बनाती है। जल, पथ्वी, अग्नि, वायु और आकाश। यह फिर उनकी 25 प्रकतियां बनाती है और 10 इन्द्रियां बनाती है। 10 प्राण बनाती है, 5 उप प्राण और 5 मुख्य प्राण (ऊपर और नीचे के)। सभी प्राण निकल जाते हैं तो एक प्राण मुर्दा शरीर में भी रहता है। इसका नाम 'धनजय' है। सो मैं थोड़ी–थोड़ी बातें बताता हूं (संक्षिप्त रूप में)। ये निकल जाते हैं। ये किससे बने? ये सब उसी चेतन शक्ति या उसी धार से बने थे। यह कौन सी धार थी? यह उसी राधास्वामी दयाल की अंश थी। उस राम का अंश थी। उस कुल मालिक की अंश थी। उस अकाल गुरु, वाहे गुरु की अंश थी। सतपुरुष की, सतनाम की बूंद, एक कतरा, उसमें से ही ये सब चीजें बनी हैं। इस मन की गति के बारे में क्या–क्या कहा जाए? यह बड़ा कीमती टाइम मिला हुआ है। ये सभी चीजें जोड़ कर एक गाड़ी बना दी गई है। इसमें से एक तत्व भी यदि बिगड़ जाता है तो सारा ही शरीर खराब हो जाता है। अग्नि, वायु की दुश्मन है। वायु जल का दुश्मन है। जल पथ्वी का दुश्मन है। ये न्यारे–न्यारे पांचों ही एक दूसरे के दुश्मन हैं। पर इस शरीर में सभी का मेल रहता है और पांचों के पांचों टिके रहते हैं, शांत। कई भाई तत्व के बारे में लड़ाई भी कर लेते हैं। कोई दो बताता है और कोई तीन। इसीलिए कबीर साहब ने कहा है–

एक कहूं तो है नहीं, दो कहूं तो गार।
जैसा है वैसा है, कहैं कबीर विचार।।

इसलिए जब अभ्यास करोगे तभी पता लगेगा। वह तत्व एक ही है। हजारों नहीं हैं। आप कहोगे कि यह किस तरह? आकाश तत्व से या शब्द तत्व से वायु तत्व, वायु तत्व से अग्नि तत्व, अग्नि तत्व से जल तत्व और जल तत्व से पथ्वी तत्व बना। जब अभ्यासी अभ्यास करके वापिस मुड़ता है, प्राण सुकड़ते हैं तो पथ्वी तत्व

जल में समा जाता है। मैं प्रलय की बातें बताता हूं। पर प्रलय महा प्रलय नहीं हुई तो पथ्वी प्रलय हो जाती है। जल के जानवर रह जाते हैं। जल सिमट कर अग्नि तत्व में समा जाता है। फिर भी अग्नि तत्व के जीव रह जाते हैं। अग्नि के जीव भी हैं और वे भी रह जाते हैं। अग्नि को खाने वाले जीव भी हैं। आप पूछ सकते हो कि क्या अग्नि में भी जीव होते हैं। ऐसे जीव भी हैं जो अग्नि का ही आहार करते हैं। कहते हैं चकोर अग्नि का ही आहार करता है। इसी प्रकार से अग्नि तत्व सिमट कर वायु तत्व में चला जाता है। वायु तत्व सिमट कर शब्द में समा जाता है। इसीलिए–

शब्द ही धरती, शब्द ही आकाश। शब्द ही शब्द भया प्रकाश।।
सगली सष्टि, शब्द के पीछे। नानक शब्द घटेघट आछे।।

सारा पसारा ही शब्द का है। ये कैसे है?

शब्द गुप्त जब रहा अनाम। शब्द प्रगट जब धरिया नाम।।

जब तक शब्द गुप्त था, वह अनाम था। जब वह प्रगट हो गया तो उसके नाम रखे गए। कितने नाम रखे गए। दस प्रकार के नाम रखे गए और वे नाम कौन–कौन से हैं–

एक भंवरा सा गूंजसी, दूजे घूं-घूं होय।
तीजे शब्द ज्यों शंख का, चौथे घंटा सोय।
चौथे घंटा सोए, पांचवे ताल ज्यों बाजै।
छठे ज्यों मुरली नाद, सातवें भेरी ज्यों गाजे।
आठवें मदंग नाद, नफीरी नौ।
दसवें गर्जन सिंह सी, चरण दास भले सुन लो।

पर तरतीबवार नहीं बताए। हेरा–फेरी लगाकर बता गए। स्वामी जी महाराज ने तरतीब बार बताए हैं। सो शब्द की महिमा तो सभी जानते हैं। शब्द की महिमा के बिना जीवन सफल नहीं होता है। सो यह बड़ा कीमती टाइम मिला है। यह आदमी की देह मिली हुई है। इसमें चूक गए तो कोई भी ठिकाना नहीं है। बहते

हुए चले जाओगे। आगे कहते हैं कि यह आदमी की देह मिली है और अबकी चूक माफ नहीं होगी। कैसे नहीं होगी? जब हम चोला छोड़ कर जाते हैं तो हमें सारी ही बातें याद आ जाती हैं। कौन सी बातें? जब वे यम के दूत सेल मारते हैं और फिर जीव विनती करते हैं कि मुझे फिर भेज दो। मैंने गलती खाई है। वह कहता है कि अब तो वक्त गया। काठ की हांडी एक ही बार चढ़ती है। उस वक्त बड़ा पछताना पड़ता है। हमारे शास्त्र ऐसी–ऐसी बातों पर बड़ा प्रकाश डालते हैं। पर हम गिर जाते हैं और फिर वह टाइम नहीं मिलता है। अब तो आदमी की देह मिली है। नहीं तो बार–बार दुख भरना पड़ता है। यही जन्म और मरण लगा ही रहता है। इस जन्म मरण से बचना चाहते हो तो नाम की कमाई करो और नाम तुम्हें नामी से मिला देगा और कोई रास्ता नहीं है। आगे कहते हैं–

गफलत छोड़ भुलाओ जग को, नाम अमल अब घोट पिया।

अब कहते हैं कि गफलत छोड़ कर इस संसार को भुला दो और नाम को घोट कर पी लो। अब मुझे बातें याद आ रही हैं। नाम कौन सा हो?

नाम नाम तो सब कहे, नाम न चिन्हा कोय।
नाम गुरु की दात है, नाम कहावे सोय।।

सतगुरु 18 मंजिलों का वाकिफकार हो। नाम की कोई बात नहीं है। नाम हो तो वह आप मिला देगा। अगर कोई बनावटी वर्णात्मक नाम बताता है तो कोई बात नहीं। असली नाम तो बदली नहीं हो सकता है। दो चीजें कभी भी बदली नहीं हो सकती हैं। एक तो अन्तर की धुनियां और दूसरी अन्तर की मंजिलें ये कभी नहीं बदल सकती हैं। ये सष्टि से पहले भी थीं, अब भी हैं और आगे भी रहेंगी। इनको कोई बदल ही नहीं सकता है। ये घटिया लोग हैं जो अकाल मौत मर जाते हैं। जो इनको बदलती हुई बताते

हैं। वे झूठे और पाखण्डी हैं।

एक प्रेमी ने कहा–राधास्वामी से आगे 42 स्थान और भी खुल गए हैं। मैंने कहा–तुम्हारी मौत आ गई है। राधास्वामी धाम से आगे न कभी कोई स्थान हुआ है और न होगा। कबीर साहब ने कहा–जो उससे भी आगे कोई स्थान बताता है वह तो काल का रूप है। हजूर महाराज राय सालिगराम जी ने कहा है कि जो इससे आगे कोई स्थान बताता है समझो वह काल का अवतार बनकर आया है। इससे आगे कोई नहीं है। ये 18 मंजिलें सभी ग्रंथों की मां हैं। सभी की यही शिक्षा है। सो बार–बार मरने से तो एक बार ही मरना अच्छा है। अगर तुम सच्चाई पर मर जाओ तो अपना जीवन सफल कर जाओगे। पर जिसने नाम को घोट कर पी लिया उसका जीवन सफल हो गया है। जिसने नाम को छोड़ दिया, वह डूब गया। नाम तो सभी के अंदर धुनकारें दे रहा है। पर जिस वक्त सतगुरु की दया मेहर होती है तभी काम बनता है। जिस तरह मैंने पहले बताया उसी तरह काम करो और विश्वास रखो। आगे कहते हैं–

गफलत छोड़ भुलाओ जग को, नाम अमल अब घोट पिया।
मन से डरो, करो गुरु सेवा, राधास्वामी भेद दिया।।

अब कहते हैं कि नाम को घोट लो, किस तरह घोट लोगे? अर्जुन साहब जी के समय की बात है। अर्जुन साहब के पास एक प्रेमी आया। उसका नाम बेहला था। मेरी भी ऐसी बातें बता दूंगा आप लोगों को। जब वह उनके पास गया तो वे उसको बातें बताने लगे। वे रोज उसको एक तुक (वाक्य) बताते थे। वह उसे खूब घोट लिया करता था। एक दिन महाराज अर्जुन साहब कहीं जा रहे थे। वह कहीं शौच–निवत्ति के लिए गया था। दौड़ा–दौड़ा आया। अभी तक उसने नाड़ा भी हाथ में ही पकड़ रखा था।

उसने कहा–महाराज! आप कहां जाते हो? अर्जुन साहब ने कहा–क्यों? बेहले ने कहा–वह तुक दस देवो। महाराज अर्जुन साहब ने कहा–वाह! रे बेहला, तू राह गिने न गेहला। मतलब यही था कि तू कोई टाईम भी नहीं देखता है। तू नाड़ा पकड़े हुए है। तो उन्होंने यही कहा कि वाह रे बेहला, राह गिने न गेहला। अब उसकी सुरत चढ़ गई। कई दिनों से जो अर्जुन साहब के पास में लोग बैठे थे वे बोले–यहां कोई भी न्याय नहीं है। यह क्या है? कल जो आया है उसको तो इतनी मौज मिल गई है, पूरी तरह सूरत चढ़ गई है और हम कितने पुराने, वर्षों से सेवा कर रहे हैं। हमारी तो आज तक भी सुरत नहीं चढ़ी है। यह तो अन्याय है। हम नहीं रहेंगे। अर्जुन साहब ने कहा–कोई बात नहीं है। बैठ जाओ। थोड़ी भांग लाओ। इसे रगड़ो। वे भांग रगड़ने लगे। अर्जुन साहब ने कहा–खूब रगड़ लो। क्योंकि खूब रगड़ने से ही ज्यादा नशा होता है। जितना रगड़ोगे उतना ही नशा होगा। उन्होंने कहा इससे फालतू और क्या रगड़ेंगे? अर्जुन साहब ने कहा कि इसमें पानी मिलाओ उसको घड़े में मिला लिया। सभी को लौटा भर–भर के दे दिया। अब अर्जुन साहब ने कहा कि इसमें से चुलू भर–भर करके बाहर रेत में फैंक दे। उन्होंने उसको चुलू भर–भर करके रेत में फैंक दिया। कहा–अरे! मैंने तो सुना है कि भांग से नशा होता है। क्या तुम्हें नशा नहीं हुआ है किसी को भी? उन्होंने कहा कि भांग पीने से ही नशा होता है। भांग को अगर फैंक दोगे तो नशा कैसे होगा? भांग को तो घोट कर पी लें, तभी नशा होता है। अर्जुन साहब ने पूछा–अब तो जवाब मिल गया होगा? इसने नाम घोट कर पी लिया है। नाम तो गुरु की दात होती है, इसे ही कहते हैं–

नाम-नाम तो सब कहैं, नाम न चिन्हा कोय।
नाम गुरु की दात है, नाम कहावै सोय।।

नाम गुरु की दात है। सो मेरा खुद का तजुर्बा है। यहां केलंगा से भी आए हुऐ होंगे। वहां की एक लड़की थी। उसका नाम हरबाई था। उसने मास्टर रतनदास से नाम ले रखा था। मैंने कहा–हरबाई! क्या तूने नाम ले लिया है? उसने कहा–हां जी। मैंने पूछा–क्या नाम लिया? उसने कहा–बताऊंगी नहीं। मैंने कहा–कोई नाम तो जपा होगा। सतनाम था, या सोहम् या राधास्वामी, कुछ तो जपा होगा। उसने कहा–नहीं, बताऊंगी नहीं। हमारा तो और ही नाम है। मैंने कहा–बता तो नाम कौन सा है? आखिर उसने कहा कि आप किसी को बताना नहीं। मेरा नाम तो है, बकरी की तीन टांग। सोचो! मैं क्या कहता हूं? ये तो मेरे सामने की बातें बताता हूं। बेहले की बात सिद्ध हुई कि नहीं अब? उसने कहा–महाराज जी! मेरे गुरु ने तो यही नाम दिया है कि बकरी की तीन टांग। मैंने पूछा–क्या दिखता है? उसने कहा–प्रकाश देखती हूं। बड़े तारे चमकते हैं और बिजलियां चमकती हैं। प्रकाश बड़ा भारी है। फिर मैं तो सुन्न भी हो जाती हूं। मैंने सोचा–यहां आकर के नाम बड़ा नहीं है। सतगुरु बड़ा है। आपने ये शब्द भी सुना है–

गुरु तारेंगे हम जानी, तू सुरत काहे बौरानी।

नाम नहीं तारता है। सतगुरु तारता है। सतगुरु और नाम में भेद नहीं है। सतगुरु उसको कहते हैं कि जो अनामी धाम का वासी हो। उस रंग में रंगा हुआ हो। इसीलिए स्वामी जी कहते हैं–

गुरु तारेंगे हम जानी, तू सुरत काहे बौरानी।
दढ़ पकड़ो शब्द निशानी, तेरी काल करे नहीं हानि।

अब मैं उस महात्मा को कहने लगा–महाराज आपने इसको नाम दिया? उसने कहा–मैंने तो इसको नाम दिया ही नहीं। झूठ बोलती है। मैंने कहा–यह कह तो रही है। हरबाई ने कहा–क्या आप ने नाम नहीं दिया? मैं उस दिन आपके पीछे लगी रही। आपने कहा कि क्या नाम होता है? जा यही नाम है, बकरी की

तीन टांग। मैं तो उसी तरह से बकरी की तीन टांग, बकरी की तीन टांग जपती हूं और फिर उसने कहा–यह गुफा बनाना (बुकली मार कर बैठना) किसने बताया? हरबाई ने कहा–यह तो मैंने बैठे देख लिए थे। मैं इस तरह बैठ जाती हूं और मेरा तो भजन भी खूब बनता है और शब्द खुलता है। अब! आपने कबीर साहब की साख भी सुनी होगी। वे कहते हैं कबीर साहब जब रामानन्द के पास में गए। उन्होंने क्या किया था? उन्होंने उनके सिर पर हाथ रखा था और यही कहा था कि–बस बेटा! राम–राम भज। पर सतगुरु पूर्ण और सच्चा होना चाहिए। मैं तो झूठे गुरुओं से बचाने के लिए आया हूं। बल्कि सच पूछा जाए तो उन गुरुओं को तो मेरा अहसान ही मानना चाहिए कि हम पाखण्ड छोड़ कर और सचाई पकड़ कर सुरत शब्द का अभ्यास कर लें। ब्रह्मचर्य का पालन करके उन्हें अपने घर जाने की कोशिश करनी चाहिए। सो गोरखनाथ की वाणी भी है–

ऊपर से खा और नीचे से झरै। उसका गोरख क्या करै।।

सो वह तो गिर जाता है। मैं तो बचने के लिए ही बातें बताता हूं। बल्कि हमारे हिन्दुओं के ग्रंथ कहते हैं, ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला ब्रह्मलीन हो जाता है। बिना सतगुरु के भी ब्रह्म में पहुंच जाता है। ऐसा मैंने सुना है। यह बात झूठी भी नहीं है। ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला (सनातन धर्म की जैसे पुस्तकें सुनी हैं) ब्रह्म में बिना भजन सुमरन के पहुंच जाता है और ब्रह्मलीन हो जाता है। सो इस प्रकार से मैं शब्द स्वरूपी सतगुरु की महिमा सुनाता हूं। सतगुरु वही होता है जो शब्द भेदी हो। सो नाम की महिमा फिर बताता हूं। आपने कबीर साहब की भी ये बातें सुनी होंगी। कबीर साहब जब रामानन्द के पास गए, तो रामानन्द ने उनके सिर पर हाथ रख दिया और राम–नाम का मंत्र दे दिया। वे तो जीवों को तारने ही आए थे। उन्होंने कहा कि मेरा गुरु तो रामानन्द है। उस

वक्त तो छूआ–छूत बड़ी भारी थी। इस छूआ–छूत ने सारा ही सत्यानाश कर दिया। जो छूआछूत करता है वह सबसे बड़ा पापी है। पर मैं भी कहता हूं कि छूआ छूत करो। शराबियों से बचो। कबाबियों और गंदे आदमियों से बचो। वे कौन हैं ? अरे! तुम तो यही कहते हो कि हमें शूद्रों से बचना चाहिए। शूद्रों को शास्त्र नहीं सुनाना चाहिए। अगर वे शास्त्र सुनते हैं तो उनके कान में पारा भर दो। पर क्या किसी को ये भी पता है कि शुद्र कौन होता है ? हम तो बेचारे इन छोटी जाति वालों को ही शूद्र कह देते हैं। शूद्र तो वही है जो शराब पीता है। शूद्र तो वही है जो मांस खाता है। शूद्र तो वही होता है जो मां को ठोकर मारता है। शूद्र वही होता है जो गुरु के वचन को नहीं मानता है। शूद्र वही होता है जो गौ मरवाता है। जो सारे खोटे कर्म करता है। सो तुम्हारी गीता कहती है–

ब्रह्मविदः ब्राह्मणः।

जो ब्रह्म को पहचान लेता है, वही ब्राह्मण है। कई शूद्र–शूद्र करते रह जाते हैं। मैं भी यही कहता हूं कि हम शूद्र को कभी भी नाम नहीं देते हैं। अगर कोई शराब और मांस प्रयोग करने वाला आ जाए, उसे हम शूद्र कहते हैं। उसको हम नाम नहीं देते हैं। हमारे ऋषियों का भी यही नेम था कि शूद्र के कानों में पारा भर दो। शूद्र तो वही है जो खोटे कर्म वाला है। क्या रविदास शूद्र थे? क्या वाल्मीकि शूद्र थे? क्या भीलनी शूद्र थी? क्या सुपचऋषि शूद्र थे? कितनों की बातें कहूं? बल्कि हमारे महात्माओं ने तो उनकी बड़ाई की है–

साहेब के दरबार में, केवल भक्ति पियार।
साहेब भक्ति से राजी.....।।
तजे दुर्योधन के पकवान।। खाए दासी सुत-भाजी।
जप, तप नेम अचार करे बहुतेरा कोई।
खाए शिबरी के बेर, ऋषि-मुनि सब रोई।।

करा युधिष्ठर यज्ञ, जोड़ा सकल समाजा।
मरता सब का मान, सुपच बिन घंट न बाजा।
पलटू ऊंची जाति का, मतकर कोई अहंकार।।
साहेब के दरबार में, केवल भक्ति पियार।

और भी सुनो। पलटू जी क्या कहते हैं–

हर नै भजै सो बड़ा, जाति न पूछै कोय।
जात न पूछे कोय, हरि को भक्ति पियारी।
जो कोई करै सो बड़ा, हरि जाति नहीं निहारी।।
बधिक अजामिल रहे, रहे फिर सज्जन कसाई।
गणिका वेश्या रही, विमान पर तुरंत चढ़ाई।।
नीची जाति रहे रैदास, लिया अपने बीच मिलाई।
लिन्हा गिद्ध को गोद, दिया बैकुण्ठ पठाई।।
पलटू पारस के छुए से, लोहा कंचन होय।
हर नै भजै सो बड़ा, जाति न पूछै कोय।।

अतः हमारे ऋषि–मुनियों की बातें झूठी नहीं थी। उन घटिया आदमियों को शास्त्र नहीं सुनाना चाहिए। हम भी उन शुद्रों को कभी भी नाम नहीं देते हैं। अब शूद्रों की बातें तो समझ गए। ऐसा न हो कि कोई भाई चिढ़ जाए। जैसे हमारा भाई फतिया कह दे कि हमें शूद्र कहते हैं। नहीं ! तुम तो उजले हो। जिसने शराब और अण्डे का प्रयोग छोड़ दिया, मांस छोड़ दिया है वह तो ब्राह्मण से भी ऊंचा है। उसने तो ब्रह्म को पहचान लिया है। सो शूद्र तो उन गिरे हुओं को कहते हैं।

सो प्रेमियो, सत्संगियों ! मैं आपको कबीर की बातें बता रहा था। कबीर साहब आए और उनसे ब्राह्मणों ने पूछा–तेरा गुरु कौन है? उसने कहा–रामानन्द जी। ब्राह्मण सब इकट्ठे होकर रामानन्द जी के पास गए। मेरे गांव वाले ही न चिढ़ जाएं। दिनोद गांव ने मेरा कुएं से पानी भरना ही बंद कर दिया था। क्या सोचते हो आप

लोग? मैं किसी घर में लस्सी लेने गया और लस्सी मांगी। उसने कहा–हमारे पास तेरे लिए लस्सी नहीं है। दूसरा भाई वहां से लस्सी का एक बरोला भर कर चला गया। मैं फिर वहां लस्सी मांगने नहीं गया। मेरा कुएं पर, मंदिर में घड़ा फोड़ दिया। कहा कि तेरे पास तो चमार और धाणक बैठते हैं और तू यहां मंदिर में पानी का घड़ा भरने के लिए आया है। कुटिया में 9–10 दिन तक पड़ा रहा। कुटिया में से निकला ही नहीं। न पानी पीया और न रोटी खाई। मेरे साथ इतना बुरा क्यों हुआ? मैं जिस मंदिर में जाया करता था, वहां चार सौ वर्ष पहले एक साधु हुआ था। मैंने उसकी मूर्ति बनवाई थी। उस वक्त उस साधु के दर्शन हुए। उस वक्त तो मैंने यही कहा कि साधु के दर्शन हुए। फिर जब मेरे विचार बदले तब की बात और है। साधु के दर्शन हुए और उसने कहा–पगला! कैसे पड़ा है? खड़ा हो, रोटी खा, पानी पी। तेरी सब ही चीजें न्यारी बन जाएंगी। तू किसी के मुंह की तरफ नहीं देखेगा। सब तेरे ही मुंह की तरफ देखेंगे। ये मैं अपनी अनुभव की बातें कहता हूं। जिस महात्मा को गुजरे हुए चार सौ वर्ष हो गए थे, उनकी बातें बताता हूं। मेरा वह ईष्ट था। वह मुझे बातें बता दिया करता था। मैं बता दिया करता था कि ऐसा होगा और वैसा ही होता था। सो महात्मा ने मुझ से कहा–खड़ा हो। रोटी खा और पानी पी। मैंने कहा–मेरा कुएं पर घड़ा फोड़ दिया और पानी नहीं भरने दिया। उसने कहा–कोई बात नहीं है। मेरे कुणबे की कोई काकी, ताई थी, वे पानी का घड़ा रख जाती थी। पर 15–20 दिन में कुंआ तैयार हो गया। आश्रम के बाहर कुंआ है। वहां खारा पानी था। पर जब कुंआ खोदा तो मीठा पानी निकल आया। उसका पानी सभी पीते हैं। अब कुंआ तो बन गया। मैं तो कभी भी पानी के लिए नहीं गया और सिर पर घड़ा भी नहीं उठाया। वह कुंआ

बन गया और मंदिर बन गया। मेरे विचार बदलते जा रहे हैं। वही बातें मैंने कहीं और एक दिन मेरे दिमाग में आई कि क्या वह महात्मा जिसको चार सौ वर्ष हो चुके, वह भूत बना फिरता है? जो मुझे अब दिखाई देता है। सोचो! मैं कौन सी बातें आप लोगों को बताता हूं? तुम सभी इस चक्कर में पड़ गए होंगे कि हम उस मंदिर की मूर्ति के आगे मत्था टेक दें जो महाराज जी ने प्रगट किया था। मेरे दिल में ये बात आई कि क्या वह महात्मा भी भूत बना फिरता है जो दिखाई देता है। मेरे दिल में शान्ति नहीं आई। अगर वह महात्मा मोक्ष में चला गया है तो वह कौन दिखता है? अगर वही दीखता है तो वह तो भूत ही बना फिरता है। फिर उसने क्या भजन किया और उसकी क्या मुक्ति हुई? मैं ये बातें सोच कर पं० फकीरचन्द के पास चला गया। मैंने गुरु महाराज जी से ये बातें नहीं पूछीं। मैंने उनसे कहा–महाराज जी! मैं एक प्रश्न करने आया हूं। उन्होंने कहा–बोलो! मैंने कहा–एक महात्मा को गुजरे हुए चार सौ वर्ष हो चुके हैं और वह मुझे बड़े दष्टांत देकर बातें बताता है। पर मेरे दिल में यह शंका आ गई कि जो महात्मा मुझे दिखता है क्या वह भूत बना फिरता है? अगर वह मुक्ति में चला गया है तो वह कौन दिखता है? वह तो करणी का धनी था। वह तो मोक्ष में चला गया। वह दिखता कौन है ? मुझे उन्होंने थपकी दी कि धन्य हो बेटा! मुझे एक तो सच्चा और बढ़िया आदमी मिला। अब मैं आपके आगे सच्चाई बताऊंगा। नितानन्द की वाणी है–

मन ही देवी-देवता, मन ही पित्तर भूत।
मन ही हर होत है, हर को भजो सुचित।।

राम को भजोगे तो मन राम बन कर आ जाएगा। कष्ण को भजोगे तो कष्ण बन करके आ जाएगा। तीन गुणों में मन का ही खेल है। वह महात्मा तो करणी करके अपने धाम में पहुंच गया है। उस महात्मा के शुद्ध विचार थे और उसकी जो पवित्र रेडीएशन

घुमती है वह तेरी पवित्र रेडीएशन से टकरा गई। जब दोनों ही रेडीएशन टकराती है तो महात्मा का रूप बनकर तुझे दर्शन देती है। अगर तुझे वह फिर मिलता है तो उससे तू यह पूछ लेना कि मुक्ति कैसे होगी? वह क्या बताता है? तुम रोज देवी की पूजा करते हो। हनुमान को प्रगट करते हो। गूगा, भैरों, राम और कष्ण को प्रगट करते हो पर उनसे यह पूछ लो कि मुक्ति कैसे होगी? वे नहीं बता सकते हैं कभी भी। अगर तुम्हें दादू, पलटू, कबीर, रैदास मिल जाए तो वे भी नहीं बताएंगे। मैं आपको और भी बातें बता देता हूं। क्योंकि वे तो अपने घर चले गए हैं। उनसे पूछना है तो उनके अनुयायी हैं। जिनमें उनकी धार प्रगट होती है उनका रूप धार करके और शब्द स्वरूपी बनकर आए हैं, वही बता सकते हैं दूसरा नहीं बता सकता है। सो मैंने आपको सत्संग कराया है। पाखण्ड नहीं कराया है। पर तुम्हारे विचार ही शुद्ध नहीं होंगे तो तुम भजन बंदगी नहीं कर सकते हो। शुद्ध विचार अपने चाल चलन को अच्छा रखकर ही होंगे। ऊंचे विचार रखो। बल्कि मेरा तो सब से पहला धर्म यही है कि अपने बुजुर्गों की सेवा करना सीखो। गरीबों की मदद करना सीखो। आपने सुना नहीं है कि गरीब की मदद में सब कुछ आ जाता है। मैं तो यहां तक कहता हूं कि–

गरीब मत सताइए, बुरी गरीब की हाय।
मुए ढोर के चाम से, लोह भस्म हो जाय।।

अर्थात वह धोंकणी होती है जिस का चमड़ा मरे हुए पशु का होता है वह लोहे को भस्म कर देता है। सो ही कबीर साहब जी कहते हैं कि–

गरीब न सताइए, गरीब रो देगा।
सुन लेगा मालिक तो दुनियां से खो देगा।।

सो मैं आपको यह शिक्षा देता हूं कि वद्धों की सेवा किया

करो और गरीबों की मदद किया करो। जैसे भी हो वैसी करो। तुम मुझे तो नोट देते हो और बराबर में भाई भूखा है। तुम्हें उसकी मदद करनी चाहिए। यह तो मैं नहीं कहता कि यहां मत दो। अगर तुम इन डेरों और धामों में नहीं दोगे तो किस तरह चलेंगे। यह तो जैसा दोगे वैसा लोगे। कुंआ भी बदला उतार देता है। अगर उसमें मुंह देकर ये आवाज दोगे कि कुंआ तेरी मां मरगी तो वह भी यही कहेगा कि तेरी मां मरगी। सो यह तो दूसरा ही व्यवहार है। जैसा दोगे वैसा ही लोगे। यह तो तुम्हारा कर्म भोग है। अब आगे स्वामी जी कहते हैं–

मन से डरो करो गुरु सेवा, राधास्वामी भेद दिया।

अब! गुरु की सेवा क्या है ? कई तो हार चढ़ाने को ही गुरु की सेवा कहते हैं। नोट चढ़ाने को सेवा कहते हैं। कई तो कपड़े पहनाने को ही सेवा कहते हैं। हलवा पूरी खिलाने को सेवा कहते हैं। यह तो सेवा नहीं है। यह तो तुम्हारा जगत–व्यवहार है। जैसा दोगे वैसा लोगे। द्रोपदी ने एक लीर (कतरन) दी थी। कपड़े का पहाड़ बन गया। कर्ण ने दान दिया था। उसके लिए पहाड़ के पहाड़ सोने के बन गए। सो कहते हैं–

सतगुरु बिन माला फेरते ओर गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दान हराम है, जा पूछो वेद पुरान।।

अब! उन्हें भी गुरु की शरण लेनी पड़ी नहीं तो लेने के देने ही पड़ गए थे। जितना देते हो उसका तो हजारों गुना मिलता है। यह कोई बुरी बात नहीं है। पर सतगुरु की सेवा है वह सुन लो। सतगुरु की सेवा तो जो नाम बताया है उस की कमाई करो। उस नाम की कमाई करके अपने घर पहुंच जाओ। मैं आप लोगों को बताया करता हूं कि सब से बड़ा पापी कौन है ? यह बात अधूरी रह गयी थी। आप कहोगे कि याद आ गई। याद क्या आ गई, मैं आगे चला गया था। फिर से वापिस आया हूं। सो ही मैं आपको

बताता हूं कि सतगुरु की सेवा ही तुम्हें पाप से बचा देगी। नहीं तो बड़े–बड़े पापी बने बैठे हैं। सब से बड़ा पापी अपनी आत्मा को धोखा देना है। अपनी आत्मा को धोखा वही देता है जो नशे, विषयों में पड़ा है। अपनी आत्मा को धोखा वह देता है जो परमात्मा को भूल कर खोटे कर्मों में लगा हुआ है। वह अपनी आत्मा को मैली करता जा रहा है और मैली आत्मा त्राह–त्राह करती है कि ऐ नालायक! तेरा सत्यानाश हो। मैं तेरे पास आकर दुख पाई हूं।

महाराज जी एक मिसाल दिया करते थे कि एक साधु के पास कई सत्संगी बैठे थे। कोई बात चल पड़ी। महात्मा ने कहा–अगर तुमने नाम लेना है तो तुम सब जाओ और जो सब से गिरी हुई चीज है वह लेकर आओ। सब से गंदी चीज कौन सी है? अब कोई कुछ उठा लाया और कोई कुछ उठा लाया। एक प्रेमी बिष्टा उठा लाया। उसने महात्मा के आगे रख दिया। उसने कहा–महाराज! सब से गंदा तो ये बिष्टा है। महात्मा मिसाल देते हैं। इसका मतलब समझ लो। जैसे मकान का ढोला होता है वह तो कच्चा होता है पर मकान को तो पक्का करता है। इसी तरह मिसाल का तात्पर्य लिया जाता है। बिष्टा बोल पड़ा–सुन रे भाई! तू क्या कहता है? मैं गंदा नहीं हूं। ऐ इन्सान तेरे से गंदा तो कोई भी नहीं है। मैं तो अन्न देवता था। बेईमान तेरा संग करके ही मैं बिष्टा बन गया। आज मुझ से सभी को घणा होती है। कल में वह अन्न देवता था जिस कि पूजा होती थी। उसे खाकर आंखें खुल जाती हैं। सो मैं तो देवता था। तेरे संग के कारण मैं गिर गया। बदबू आती है सभी को। इसीलिए कहते हैं–

बुरा जो खोजन मैं गई, बुरा न पाया कोय।
जो तन खोजूं आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

अपनी ही आत्मा को हम दागी कर लेते हैं। इससे बड़ा पाप

और क्या करोगे? तुम अपनी ही आत्मा का अकाज करते हो। यह तो सतपुरुष की अंश थी। राधास्वामी दयाल की अंश थी। इसे वापिस पहुंचा दोगे उस राधास्वामी धाम में तो बाजी जीत जाओगे। इसे ही हम परमार्थ कहते हैं। जो मंदिर और गुरुद्वारे, डेरे, धर्मशालाएं बनाते हो ये परोपकार है। अपना जो कारोबार करते हो उसे हम स्वार्थ कहते हैं। स्वार्थ नहीं करोगे तो परोपकार कैसे करोगे? परोपकार अगर निस्वार्थ होकर करोगे तो वह परोपकार तुम्हारा पुण्य बन जाएगा। फिर वह परोपकार सुरत को राधास्वामी धाम में पहुंचा देगा। इसको कहते हैं कि हम परमार्थ करने के लिए आए हैं। वह परमार्थ माना जाता है। अपनी सुरत को सतलोक में ले जाना। इसका नाम परमार्थ है। मुझ से मास्टर ने कहा–जब आप सत्संग करते हो तो मैं बड़ा चौकन्ना रहता हूं। मैंने पूछा–क्यों? इसने कहा–जब आप भूल जाते हो तो मैं याद दिलाता हूं। क्या ये याद है? इसीलिए मैं इन्हें बताऊं था, क्योंकि यह कहता था कि मैं आपको याद दिलाता हूं। बताओ अब याद दिलाया हो तो। इनके भरोसे तो मारे जाओगे। अपने दम पर काम करो। जेसे चाचा साधुराम ने कहा–क्या आश्रम भिवानी में बना लें? मैंने कहा–चाचा! पहले बात सुन ले। एक जमींदार ने अपनी घरवाली से कहा–अब मैं इस वर्ष ईख बोऊंगा। उसकी घरवाली ने कहा–ईख बेशक बो ले, पर ईख बोना अपनी छाती पर। जमींदार ने कहा–मेरी छाती पर तो एक ही पेड़ उगेगा। मेरा नाश हो जाएगा। मैंने भी यही कहा कि चाचा! बेशक आश्रम बना ले, पर बनाइए अपनी छाती पर। तो वही बात हुई। इन्होंने ये सारा अपने ही दम पर बनाया है। सारा काम आप ही करते रहते हैं। मैं तो यहां का ट्रस्टी भी नहीं हूं। मैं सीधी बातें बताता हूं। दो घड़ी नाच कर देता हूं, जब सत्संग का टाइम आता है। मेरी बात अच्छी लगे तो आ जाना। मैंने कबीर साहब की बातें बताई हैं। अब पंडित लोग रामानन्द के पास चले

गए और उसको कहा–आप तो कहते थे कि मैं शूद्रों को नाम नहीं देता हूं। फिर उसके गुरु क्यों बने? रामानन्द ने कहा–किसका? उन्होंने कहा–कबीर के। रामानन्द ने कहा–नहीं, वह तो झूठ बोलता है। उसको बुलाओ। कबीर साहब को रामानन्द ने बुलाया और आगे परदा डाल दिया। परदे के अंदर तो रामानन्द बैठे थे और बाहर कबीर साहब खड़े थे। रामानन्द ने कहा–क्यों रे कबीरिया! मैं तेरा गुरु कब बना था? कबीर साहब ने कहा–आप तालाब पर नहाने गए थे। मैं वहां पौड़ी पर लेटा पड़ा था। आपकी खड़ाऊ मेरे सिर में लगी। मैं रोने लगा। आपने सिर पर हाथ रखा और कहा–बस बेटा! राम–राम कर। गुरु और क्या बताता है? राम–राम का मंत्र दे दिया और सिर पर हाथ रख दिया। अब बाकी कौन सी बात रह गई? कबीर साहब पूर्ण पुरुष तो थे ही। कहते हैं जब कबीर साहब ने यह बात कही तो रामानन्द ने परदा फाड़ दिया। परदा हटा कर उन्होंने कबीर साहब को गोद में उठा लिया। कबीर साहब ने कहा–सुनो! मेरी बात सुनो। उन्होंने तब यह शब्द गाया था।

ओ गुरु रामानन्द जी! सोच समझ पकड़ो म्हारी बहियां।
चोदह सहस्र चौरासी चेले उन जैसे हम नहियां।
हम तो सौदा सच का करदे, पाखण्ड पूजत नहियां।।
सो बालक गलियां खेलैं, उन जैसे हम नहियां।
जो सतगुरु म्हारी बांह पकड़ेंगे फेर छुटण की नहियां।।
(ऐसा न हो कि लोक लाज में फिर छोड़ दो)
सूखा लक्कड़ घुण ने खाया, लोहा लाग्या जरिया।
सत् संगत की सार नहीं जाना, जम घसीटें बहियां।।
गुरु रामानन्द जी सोच समझ पकड़ो म्हारी बहियां।

(जो सत्संग की सार नहीं जानता है उसकी बांह पकड़ कर जम घसीटता है।)

प्रेम भक्ति गुरु रामानन्द लाए।

उस प्रेम भक्ति को रामानन्द जी लाए थे और उसकी गंगा कबीर साहब ने हर जगह बहा दी। सो –

गुरु भी पूरा और चेला भी पूरा, बड़े भाग से मेल मिलाई।

अब बात यह है कि संतमत निखालिश कलाकंद मिश्री है। जो इस संतमत को समझ गया तो करणी आप ही बन जाती है। संतमत न घर छुटाता है न बच्चे बस ऐब छुटवाता है। इनसे बचकर रहो। ये ऐब ही हमारी जान के ग्राहक बन जाते हैं। सो मैंने आपको अपनी ड्यूटी दे दी मानो तो तुम्हारी मर्जी नहीं मानो तुम्हारी मर्जी। सब को राधास्वामी।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

अप्रैल/मई मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1.	इस्माइलपुर	18 अप्रैल	-	24 अप्रैल
2.	कोसली	25 अप्रैल	-	01 मई
3.	लालपुर	02 मई	-	08 मई
4.	चौबारा	09 मई	-	15 मई
5.	थिरपाली	16 मई	-	22 मई

लालसा

महर्षि शिवव्रत लाल जी

जिस वस्तु की प्राणी को आरम्भ में लालसा होती है उसके लिये वह हितचित्त से काम में लग जाता है अथवा उसके लिये उसका जीवन ही अर्पण हो जाता है और फिर उन वस्तुओं के साथ उसका सम्बन्ध जुड़ जाता है, जैसे किसी को कारीगर या चित्रकार बनने की अभिलाषा है तो वह वैसी ही संगति ग्रहण करेगा। उसी प्रकार की शिक्षा का अधिकार प्राप्त करता जायेगा। यहां भी वह ही अटल नियम काम करता है। आदि में विशेषता का संस्कार है। फिर पंथ का चलना शुरु होता है। जाने या अनजाने कठिनाईयां, निराशायें, मेहनत, सत्संग भले बुरे कर्म, मान प्रतिष्ठा की लालसा आदि कामनाओं के बीच होकर पथिक को गुजरना होता है, तब जाकर फल के भोगने का अवसर निकल आता है।

हम संसार से किसी ऐसी वस्तु की आशा नहीं करते जिसका बदला हम चुका नहीं सकते। खोजकर ऐसा मार्ग तलाश करना या किसी काम को हाथ में लेना पहला काम है। दूसरा कर्म मार्ग या पंथ पर चलना है, जो हमको पंथाई का नाम प्रदान करेगा। यदि हमारे मन को दुख होता है और हमारे पग लड़खड़ाते हैं तो जान लेना चाहिये कि पंथाई बनने में जीवन के पवित्र, पुनित और श्रेष्ठतम सम्बन्ध जोड़ने में हमारी अपनी कायरता और कुबुद्धि पथ भ्रष्ट कर रही है। प्राणी जो चाहता है, उसको वह वस्तु, प्राप्त हो जाती है, परन्तु हर वस्तु का मोल चुकाना पड़ता है। तपस्या करनी पड़ती है उस ईष्ट सिद्धि के उस अमूल्य रत्न का मोल यह मानुषी परिश्रम, चिन्ता, सोच, व्याकुलता विषाद आदि ही है, जिनको वह भूल और भ्रम से यह समझता है कि हमको अपने किये का फल नहीं मिला। मनुष्य की बुद्धि पूर्ण नहीं है, संकुचित है। ●

अनमोल वचन

- सब प्राणियों का खून एक है, चाहे वह बकरी हो, गाय हो या अपनी सन्तान। पीर पैगम्बर और ओलिया सब एक दिन मर जायेंगे। इसलिये अपने शरीर का पालन करने के लिये जीव को व्यर्थ न मारो। *–गुरु नानक देव*

- यदि कोई मुझे अपमान पूर्व अमृत पिलाए, उससे तो यही अच्छा है कि वह मुझे बुलाकर सम्मानपूर्वक विष दे दें और मैं मर जाऊं। *–महात्मा रहीम*

- जहां दया रहती है, वहां धर्म रहता है, जहां लोभ रहता है, वहां पाप का वास होता है। जहां कोध रहता है, वहां मृत्यु रहती है और जहां क्षमा रहती है, वहां भगवान रहते हैं। *–संत कबीर*

सत्संग भावांश भिवानी 20-3-2005

सतगुरु के ऊपर पूर्ण विश्वास और तसल्ली करके उसको कुल मालिक मान लोगे तो परमात्मा तुम्हें उसी प्रकार मिल जाएगा, जिस प्रकार विद्यार्थी अंक गणित के प्रश्नों में किसी चीज की कीमत की कल्पना 'क' या 'ल' मान कर सूत्र के अनुसार उसकी सही कीमत सरलता से प्राप्त कर लेता है। सन्त सतगुरु और उसके नाम के अभ्यास के बिना तुम्हारे जीवन को तीर्थ, व्रत, जप तप, पूजा-पाठ या कोई धार्मिक पुस्तकें पवित्र नहीं बना सकती हैं। जब तक मन पवित्र नहीं होगा तुम्हारा जगत और अगत नहीं बन सकेगा। यह मार्ग तो सन्तों ने जीव पर दया करके ही बताया है। इसलिए राधास्वामी मत के मार्ग पर चलकर अपने जीवन को सुखी बना लो।

जिन्दा सतगुरु में पूरा विश्वास रखो। जब सर्गुण सतगुरु में पूरा विश्वास होगा तो सूक्ष्म सतगुरु भी तुम्हारी मदद कर देगा, इसी को लोग पर्चे मिलना बताया करते हैं। जिन्दा गुरु पर पूर्ण विश्वास होगा और उसकी बातों को मानोगे तब तुम्हारा भजन भी बन जाएगा। मेरे पास बहुत बहन-भाई आते हैं। वे पहले अपनी दस समस्याएं रखते हैं और वे मुझ से ही उनका हल करवाना चाहते हैं और फिर कहते हैं कि हमारा भजन नहीं बनता है। जब उनके मन में संसारी चाहें हैं और मेरे वचनों के अनुसार चलते नहीं हैं उनका जगत भी नहीं बनता है और अगत भी नहीं बन सकता है क्योंकि ऐसी

अवस्था में उनका भजन भी नहीं बन सकता है। जगत और अगत की सभी परेशानियां व कष्ट तो इन्हीं दो बातों से हल हो सकती है।

संसारी चाहे रखकर या पेट के लिए तुम बुरा काम करोगे, अपवित्र कमाई खाओगे तो मारे जाओगे। कुछ खाते-पीते लोग भी कह देते हैं कि क्या करें पेट के लिए सब कुछ करना पड़ता है। वे लोग गलत कहते हैं। खाने-पीने का प्रबन्ध तो परमात्मा करता है और वह जीव के जन्म लेने से पहले ही उसका यह प्रबन्ध कर देता है। इन्सान को ऐसा दृढ़ विश्वास होना चाहिए। जो लोग सब कुछ होते हुए भी भूख ही भूख पुकारते रहते हैं तो ऐसे लोग निश्चित रूप से भूखे मर ही जाते हैं। उनकी संसारी चाहों की भूख कभी मिट भी नहीं सकती है।तब तुम्हें कोई बचा नहीं सकता है। सतगुरु ने तुम्हें नाम की बख्शीश की है, सच्चे दिल से उसका अभ्यास करो। संसारी चाहें मिटाकर सन्तोष धन को साथ लेकर काम करो। सन्त तो यह कहते हैं कि-

चाह गई चिन्ता मिटी, मनुवा बेपरवाह।
जिनको कछु नहीं चाहिए, वोह शाहन के शाह।।

दूसरों की बुराइयां ढूंढ़ने से बुरे बन जाओगे। तुम सब से प्यार करो, सेवा करो। अपने सतगुरु के वचनों पर विश्वास करके उसके अनुसार काम करो यही भक्ति है। यदि तुम्हारे साथ बुरा काम भी कोई करता है तो भी तुम उसके लिए अच्छा व्यवहार करो। सन्तमत तो यही शिक्षा देता है कि-

जो तो को कांटे बोवै, तू बो वाको फूल।
तेरे तुझको फूल मिलेंगे, वाको हैं त्रिशूल।।

''परम पुरुष पूर्ण धनी हुजूर महाराज जी राधास्वामी ! मैं मास्टर केसरी राम शर्मा, तह. पलवल, जिला फरीदाबाद सतगुरु की दया मेहर का वर्णन करता हूं, जो कि इस प्रकार है-मैं आरम्भ से ही धार्मिक प्रवृति का रहा हूं तथा सच्चे गुरु की तलाश में काफी घूमा फिरा हूं। मैंने अनेक सत्संग, प्रवचन, तीर्थ-व्रत करे। परन्तु मन की शांति नहीं मिली। तब मेरे खास मित्र छबील सिंह जी ने मुझे परमसन्त सतगुरु कंवर जी महाराज के बारे में बताया तथा कैसेट पर सत्संग सुनवाया। उनके साथ मैं भिवानी सत्संग में गया। वहां सत्संग सुनकर इतना प्रभावित हुआ कि महाराज जी से नाम की बख्शीश ली। बाद में मैं अपने मित्र के साथ दिनोद धाम गया और गुरु महाराज के सामने अपनी अभिलाषा प्रकट की। मेरे सब से छोटे पुत्र राजेन्द्र कुमार की दो बेटियां थीं परन्तु बेटा नहीं था। जितने भी पण्डितों, पुरोहितों व महात्माओं से उसके बारे में पूछा था, उन्होंने कहा था कि इसके भाग्य में पुत्र नहीं है। किसी व्रत, पूजा या अनुष्ठान से पुत्र रत्न की प्राप्ति संभव नहीं है। महाराज जी ने सारी बातें सुनी और मुस्कुरा दिए। बाद में उन्होंने प्रसाद दिया और उसे लेने की विधि बता दी। मैंने वह प्रसाद लाकर अपनी पुत्र-वधु को दे दिया। सही समय पर मेरी पुत्र-वधु ने बेटे को जन्म दिया। हमें अपने गुरु महाराज पर पूरा विश्वास है। सारा परिवार इस खुशी के मौके पर महाराज जी को शत-शत धन्यवाद करने लगा। **महाराज जी ने जब सुना तो वे कहने लगे तुम्हारी किस्मत में था सो तुम्हें मिल गया। यह सब आस्था की बात है। महाराज जी की विनम्रता देखकर हम नतमस्तक हो गये।** हम इस उपकार के लिए महाराज जी के सदा आभारी रहेंगे। हम महाराज जी से यही प्रार्थना करते हैं कि वे हमें अपने बताए सही रास्ते पर चलने का हौसला दें। हमारी

श्रृद्धा व विश्वास में बरकत करें तथा अपना आशीर्वाद सदा हम पर बनाए रखें।''

सात दीप नौ खण्ड में, गुरु के समान न कोय।
कर्त्ता करे न कर सके, गुरु करे सो होय।।

किसी भी प्राणी की रेख में मेख सन्त सतगुरु ही मार सकते हैं और किसी के पास यह शक्ति नहीं है कि कोई किसी के भाग्य को बदल सके।

राधास्वामी।

-मा. केसरी राम शर्मा,
गांव पेलक, पलवल, फरीदाबाद

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

आगामी मास के सत्संग कार्यक्रम

1 मई रविवार भिवानी

सूचना

सभी सत्संग प्रेमियों से अनुरोध है कि यदि पत्रिका से सम्बन्धित कोई सुझाव है तो हमें पत्र द्वारा जरूर लिखें जिससे पत्रिका के आने वाले अंकों को और अच्छी प्रकार से प्रकाशित किया जा सके। अपने सुझाव कृपया नीचे लिखे पते पर पत्र द्वारा भेज सकते हैं।

सचिव,
राधास्वामी सत्संग (दिनोद),

कहानी

साधक

मनुष्य के शरीर में वीर्य ही एक अमूल्य वस्तु है, जिसकी भली-भांति संरक्षण किये बिना शारीरिक, मानसिक अथवा आध्यात्मिक किसी प्रकार का भी बल न तो प्राप्त होता है और न उसका संचय ही होता है। इसलिये ब्रह्मचारी के व्रत में स्थित

ध्यान करते समय साधक को निर्भय रहना चाहिये। मन में जरा भी भय रहेगा तो एकान्त और निर्जन स्थान में स्वाभाविक ही चित्त में विक्षेप हो जायेगा। इसलिये साधक को उस समय मन में यह दृढ़ सत्य धारण कर लेनी चाहिये कि परमात्मा सर्वशक्तिमान है और सर्वव्यापी होने के कारण यहां भी सदा है ही, उनके रहते किसी बात का भय नहीं है। यदि कदाचित् प्रारब्धवश ध्यान करते-करते मृत्यु हो जाये तो उससे भी परिणाम में परम कल्याण ही होगा।

ध्यान करते समय मन में राग-द्वेष, हर्ष-शोक और काम-क्रोध आदि दूषित वृत्तियों को तथा सांसारिक संकल्प-विकल्पों को सर्वथा दूर कर देना मन को सर्वथा निर्मल और शान्त कर देना-यही प्रशान्तात्मा होना है।

ध्यान करते समय साधक को निद्रा, आलस्य और प्रमाद आदि विघ्नों से बचने के लिये खूब सावधान रहना चाहिए। ऐसा न करने से मन और इन्द्रियां उसे धोखा देकर ध्यान में अनेक प्रकार के विघ्न उपस्थित कर सकती हैं।

एक जगह न रूकना और रोकते-रोकते भी बलात्कार से विषयों में चले जाना मन का स्वभाव है। इस मन को भली भांति रोके बिना ध्यान योग का साधन नहीं बन सकता। इसलिये ध्यान

योगी को चाहिये कि वह ध्यान करते समय मन को बाह्य विषयों से भली-भांति हटाकर परम हितेषी सतगुरु, परम प्रेमास्पद परमेश्वर के गुण, प्रभाव, तत्व और रहस्य को समझकर, सम्पूर्ण जगत् से प्रेम हटाकर, एकमात्र उन्हीं को अपना ध्येय बनावे और चित्त को उन्हीं में लगाने का अभ्यास करें।

महाभारत पृ. 2648-।।।

नोट :-कार्यालय में बहुत सी ऐसी सतगुरु कपा की घटनाएं आई हुई हैं जो बड़ी अद्भुत, मार्मिक और प्रभावशाली तो है, परन्तु इन घटनाओं में तारीखे अथवा तिथियां नहीं दी गई है, जिस कारण से उनको पत्रिका में छापा नहीं जा सका है। तिथियों के बिना ऐसी घटनाएं निःस्सार हो जाती है। कपया सतगुरु कपा की घटना लिखते समय महत्वपूर्ण दिनांक या तिथि अवश्य लिखें।